स्वात्म दर्शक.

रचनार.

माताजी सच्चिदानन्दगीरी.

प्रसिद्ध कर्ता.

सुंदरबाई तथा सत्संगी वगेरे.

अमदावाद.

(श्री विजयप्रवर्त्तक प्रिन्टींग प्रेसमां छाप्यो.)

(कीलकनाम संवत्सरे.)

श्री विक्रम संवत् १९६५. सने १९०८.

आ पुस्तक अमूल्य छे.

आ पुस्तक मळवानुं ठेकाणुं.

मु. कच्छभुज.
ठे. कपडबजार महादेव सोमनाथमां
बाईओनी श्रद्धगशाळामां.
} मातानी सच्चिदानंदगीरी पासेथी.

अथ प्रस्तावना.

श्रीभगवान भाष्यकारने प्रार्थना करुंछुं. जे भाष्यकार सूर्य जेम अंधकारनो नाश करीने सर्व लोकने प्रकाश आपे छे, तेम जे भाष्यकार श्रीमच्छंकराचार्य स्वामिये वेदनो यथार्थ अर्थ दर्शावी, तथा व्यास मुनिना सूत्र उपर भाष्य करी, श्रीमद्भगवतगीतानुं भाष्य करी, तथा उपनिषद् उपर भाष्य करी, सर्व मनुष्यना अज्ञानरूप अंधकारनो नाश कर्यो छे. ते सूर्य रूप भाष्यकारने हुं वंदन करु छुं. हे दीनदयाळु मारी बुद्धिना अंधकारनो नाश करो, ने ब्रह्म विद्या रूप किरणथी मारा हृदयमां प्रकाश करो. हे भगवन् जे आपनो आश्रय करीने अनन्त मुमुक्षुजनो मोक्ष पदवी पाम्या छे.

स्वा०

अने पोताना शिष्यो पद्मपाद हस्तामलक तोटक तथा वार्त्तिक-
कार (सुरेश्वराचार्य) आदि अनेक शिष्यो अने प्रशिष्यो (शि-
ष्यना शिष्यो), तथा तेमना आश्रितजनो, (संप्रदायने अनु
सरनारा) नी बुद्धिरूप गुहाना अंधकारने नाश करीने, तथा
स्वस्वरूपनी प्राप्तिरूप प्रकाश आपीने सर्व अधिकारीओने आनंद
एटले सुखरूप प्रकाश आप्यो. अने पाखंडी प्रतिवादी, तथा वादीयो,
जेम सूर्यनारायणनो उदय थवाथी घुवड, आंधळी चाकोर, चामा-
चीडीआं आंखो मीची दे छे अने चंद्रविकासि (पोयणी) विगेरे
पुष्पो करमाइ जाय छे, तेम पराजय पामवाथी भ्रष्ट कान्तिवाळा
कर्या. तेमज पाखंडि धर्मरूप पताङ्गिया श्रीमच्छङ्कराचार्य रूप भा-
नुये पोताना उदयथी निस्तेज कर्या. जे पांच प्रकारना भेदने सत्य
माननार द्वैत वादीओनी भाष्यकार भास्कर रूप श्रीमच्छंकराचार्य

१

स्वामीनी अद्वैत व्याख्यानरूप वाणीने सांभलीने अंधकाररूप अ-
ज्ञानमय बुद्धिनी परम्पराओ नाश पामे छे. तथा भेदवादीरूप न-
क्षत्रोने पोताना शुद्ध ज्ञानरूप प्रकाशथी झांखा पाडनार, परमपूज्य
परिव्राजकाचार्य श्रीमत्स्वामी आप सूर्यरूप छो. तथा आप्त काम
छो. श्रुति कहेछे के, आप्तकाम स्य का स्पृहा-अर्थ सर्वात्म दृष्टिये
करीने जे पुरुषने सर्व पदार्थ प्राप्त थया छे, ते पुरुषनु नाम आ-
प्तकाम छे. माटे आपने सर्वत्र आत्म दृष्टि छे. तेथी आप सर्वेश्वरने
कोइ वस्तु अप्राप्त नथी. तथा आप पूर्ण काम एटले अकाम छो,
अने संन्यस्त धर्मना प्रवर्त्तावनार छो. संन्यस्त धर्म आधुनिक नथी.
प्राचीन संन्यस्त धर्मने स्थापन कर्यो छे. शंका, शंकराचार्य तो क-
लियुगमां प्रगट थया छे. ते वखतथी संन्यास धर्म स्थापन कर्यो छे.
तेने प्राचीनपणु केम संभवे ! समाधानमां ब्रह्म उपनिषद्मां भग-

वाने पोते संन्यास धर्म कह्यो छे. तथा बृहस्पतिना भाइये संन्यास धारण करेलो छे. उद्दालक, श्वेतक, दुर्वासा, ब्रह्माना मानस पुत्रऋभु अने तेमना शिष्य भृगु निदाघ नामना ऋषि, जडभरत, भगवानदत्तात्रि, वामदेव, शुकदेव आदि ऋषियोये संन्यस्त धर्म संपादन कर्यों छे. तथा गौडपादाचार्य अने गोविन्दाचार्य वीगेरे, संन्यस्त पदवीने पाम्या छे. ए रीते आ संन्यस्तनी पद्धति प्राचीन छे, आधुनिक नथी. पोते भगवान अनादिथी आ संन्यस्त धर्म चलावे छे. ॥ त्यां श्लोक ॥ " नारायणं पद्मभवं वशिष्ठ शक्तिंच तत्पुत्र पराशरंच व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्द योगीन्द्र मथास्य शिष्यम् " श्री शंकराचार्य मथास्य पद्मपादंच हस्ताम लकंच शिष्यम् । तंतोटकं वार्तिक कार मन्यान स्मद्गुरू न्संतत मानतोस्मि॥ सनन्दनं श्री सनकं सनातनं सनत्कुमारं चसनत्सुजातं । श्री

वामदेवंच शुकं महामतिंनमामि भक्त्या निजबोध सिद्धये ॥ ३ ॥

आ सर्व तथा अन्य महात्माओ संन्यास पद्धतिनेज अनुसर्या छे. माटे श्रीमच्छंकराचार्य स्वामीये संन्यास धर्म स्थापन कर्यो ते संप्रदाय प्राचीन छे. अने ते श्रीमच्छंकराचार्य स्वामीना शिष्योपद्म पादादिये, गिरी, पुरी, भारती, वन, पर्वत, अरण्य, सागर, तीर्थ, आश्रम, अने सरस्वती ए दश नामनी प्रवृत्ति करी छे माटे आ संन्यास संप्रदाय प्राचीन छे. आधुनिक नथी तेथी परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकराचार्यने तेमना संप्रदायने अनुसरनारा संन्यासीओना चरणारविन्दमां हुं अल्प बुद्धिथी गुजराती भाषामां स्वात्म दर्शक नामनो ग्रंथ निर्विघ्नताथी समाप्त थाय एवी आकांक्षाथी प्रार्थना पूर्वक प्रणाम पुष्पांजलि अर्पण करुं छुं जेम गुहाने विषे प्रकाश पामता दीवाने सूर्य नारायणनी तुलयता होय नही तेम महा-

बुद्धिशाळी विद्वान जनोये रचेला ग्रन्थो आगळ अमारो भाषाथी रचेलो स्वात्मदर्शक ग्रंथ तेमना शतांशनी योग्यता धराववाने पणशक्त नथी. तोपण जेम, सोनानी साथे तोलाती चनोठीओ सोनानी योग्यता एटले किंमतने पामी शकती नथी परंतु गृहस्थो सोनाना आभूषणो धारण करे छे. तेमज गरीब चनोठीओना हार धारण करी संतोष माने छे. तेमज अमारो स्वात्मदर्शक ग्रन्थ ज्ञानी पुरुषोये रचेला उत्तम गीर्वाण भाषारूप गरिमाथी गुंथायेला ग्रन्थोनुं अवलोकन करनारा विद्वान पुरुषोने अकिंचित्कर छे, परंतु वेदान्त ज्ञाननी जिज्ञासा धरावनारा अल्पज्ञ पुरुषोने उपयोगी छे. एम मानी ग्रन्थ रचवामां तत्पर थाउं छुं अने आकाशमां मोटा वेगवाळा गरुडना वेगने जोइने थोडा वेगवाळा पक्षीओ पोतानी गतिमां निराश थइने बेशी रहे तो ते तेमनीज भूल छे. पोतानी शक्ति मुजब ईश्वरनो

प्रसाद महानमानी हरेक मनुष्योये पोतानुं कर्त्तव्य बजाववुं जोइए. सर्वज्ञतो केवल महामृत्युंञ्जय छे. परन्तु ते ईश्वरे आपेली बुद्धि प्रमाणे पोतानुं कर्त्तव्य मनुष्योये करवुंज जोइये. तेम धारी ग्रंथ रचवामां प्रयत्न लेनार आ भक्त दासीना परिश्रमने सफल करशो एवी महात्माओ आगळ साविनय प्रार्थना छे. ॥ ईन्द्रादयोऽपियस्यान्तं नययुः शब्दवारिधेः अर्थ । ईश्वरना गुणरूप शब्द ब्रह्मना पारने ईन्द्रादि देवो तथा शेष नारायणादि व्याख्याताओ पण पामे तेम नथीः परंतु हुं मारी बुद्धिना अनुसारे आत्मात्म दर्शक नामना भाषाग्रंथनो आरंभ करुं छुं.

ग्रंथ रचवानी शैली व्याकरण छन्द काव्य कोशादि अनेक शास्त्रोना अवलोकन करनारनेज यथार्थ आवडे छे ते मारी बुद्धिमां नहि होवाथी भाषा ग्रंथथी पण करेलुं परब्रह्म परमात्मानुं स्मरण

मारी वाणीने पवित्रज करशे विख धारीने पीधेलुं. अमृत अमरज करे छे. साकर धारीने सोमल भक्षण करवाथी मरणज थाय छे. माटी धारीने पण सुंघेलु पुष्प सुगंधनेज आपे छे. बाळके अज्ञानथी रमकडानी बुद्धिथी पोताना हाथमां लीधेलो धगतो अंगारो दाहनेज करे छे. तेमज बेसतां, उठतां, बोलतां, चालतां, खातां, पीतां, वैर-भावथी, मित्रताथी, गीर्वाणभाषाथी, वा, पाकृतभाषाथी पण मनमां ऐक्यताथी करेलु परब्रह्मनु स्मरण अनेक दुरितने नाशज करे छे. (आत्माहं) अर्थ हुं परमात्मा स्वरूप छुं.

आवी बुद्धिथी थयेलुं पुण्य "नभूतंन भविष्यति" अर्थ—थयुं नथी. ने हवे पछी थवानुं पण नथी. नाम अलौकीक पुण्य थाय छे. एक क्षणवार पण हुं परमात्मा स्वरूप छुं आवुं चिन्तवन माणस करे तो तेनां महापाप जेम सूर्यनो उदय थवाथी अंधकार नाश पामे

तेम नाश पामे छे मोक्षरूप धामने पामवा माटे मायारूप महासाग-
रमां ज्ञानरूप नाव अर्पण करी अज्ञानरूप मोटां मोझांथी बचावीने
कर्णधार (खलासीया) रूप थइ जे पार पोचाडे छे. तेवा सच्चि-
दानन्द स्वरूप पूज्यपाद, श्रीमत्परमहंस, परिव्राजकाचार्य, श्रीमच्छं
कराचार्य गुरूना चरणकमळमां ज्ञानरूप मकरंदना आनंदमां मग्न
थयेली आत्मबुद्धी परब्रह्मने प्रणाम करी ग्रंथनो आरंभ करे छे. सूर्य
नारायण पोते अरूण नामना पोताना सारथीनी संभावना न करे
(पोताना आगळ न बेसाडे) तो ते कोइ दिवस प्रातःकाळना अं-
धकार नाश करवामां समर्थ थाय नहि. तेम संभावना न थाय तो
हलकी मारा जेवी दासीथी ग्रंथरचना बनेज नहि माटे आ ग्रंथ
बनावुं छुं ते कांइ मारो पुरषार्थ छेज नही जेम राजानी आज्ञाथी
सेनापति लश्कर लईने बीजा देशना राजाने जीती आवे. ते कांइ

सेनापतिनो प्रताप नथी. तेतो पोताना राजानी संभावना (आज्ञा) नोज प्रभाव छे. तेम आ सत्गुरुना प्रतापां शु माननो प्रकाशज छे. प्रमाद थवो ते मनूष्यनो साधारण धर्म छे माटे मारी बुद्धिना दोषथी अथवा मुद्रायन्त्र (छाप) ना दोषथी थयेली भुलने हंस जेम पाणीमांथी दूधने ग्रहण करी ले छे. तेम गुणग्राही सज्जनो ग्रहण करी मारा परिश्रमने सफल करशे एम वारंवार नम्रता पूर्वक, प्रणाम पूर्वक, मारी प्रार्थना छे. ॥ इतिशम् ॥

श्री गणेशायनमः श्री परमात्मनेनमः श्री शंकराचार्येभ्योनमः अथ स्वात्मदर्शक ग्रन्थारंभः । नमस्ते नमस्ते विभोविश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते । नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ॥ १ ॥ श्री गुरुचरणद्वंद्वं नमोव्यासमुख्यान्मुनीन् । विघ्नहर्तॄन् गणेशादीन्पण्डितांश्च विमत्सरान् ॥ २ ॥ अथ श्री

गुरुदेवताना बे चरणकमळने, तथा व्यास भगवान आदिने, तथा शुकदेवने, तथा गौडपादाचार्यने तथा गोविन्दाचार्यने, तथा श्री मच्छंकराचार्यने, तथा तेमना शिष्य जे पद्मपादाचार्य, तथा हस्तामलकाचार्यने, तथा तेओना शिष्योने, तथा तेमना संप्रदायमां रहेल परमहंस परिव्राजक (संन्यासी) योने, तथा गणेश, विष्णु, ब्रह्मा, सुर्य, तथा सरस्वती अने, बीजा सर्व देवोने, मत्सरादि तथा काम क्रोधादि सर्व दोषथी रहित पण्डित जनोने, एटले ब्रह्मवेत्ता पुरुषोने हुं नमस्कार करीने, गुर्जर भाषामां स्वात्मदर्शक नामना ग्रन्थने, मारी बुद्धिना अनुसारे वर्णवुं छुं.

तेमां प्रथम संक्षेपथी अनुबन्ध चतुष्टय कहेवाशे. अधिकारी १ संबंध २ विषय ३ अने प्रयोजन ४ आचार अनुबंध छे. ग्रन्थनो अधिकारी चार साधनथी सम्पन्न होवो जोइये. तेमां प्रथम साधन

सत् ने असत्नो विवेक; सत् एटले भूत भविष्य अने वर्त्तमान अ-
थवा जाग्रत स्वप्न अने सुषुप्ति, तेने विषे अनुस्यूत रहेलुं चैतन्य
साक्षी अबाधित ते सत् कहेवाय छे अने जगतना सम्बन्ध कल्-
ल्पित छे तेनुं नाम असत् कहेवाय छे जेने आलोक तथा परलोक-
नी इच्छा नथी तेनुं नाम वैराग्य छे. ते वैराग्य त्रण प्रकारनुं छे
मंद १ तीव्र २ अनेतीव्रतर ३ शास्त्रवेत्ता पुरुषो वैराग्यना आ त्रण
प्रकार कहे छे. त्रीजुं साधन शम १ दम २ उपरति ३ श्रद्धा ४
समाधान ५ तितिक्षा ६ आ छ मळीने कहेवाय छे. चोथुं साधन
मुमुक्षता एटले बीजी सर्व कामना (इच्छा) ओ निवृत्त थवाथी
केवल मोक्षनीज कामना थाय तेने विद्वान पुरुषो मुमुक्षता कहे छे.
आ चार साधनथी सम्पन्न होय ते अधिकारी कहेवाय छे, प्रति-
पादन करवा योग्य ब्रह्मने प्रतिपादन करनार शास्त्रने वेदान्तमां

शब्द कहे छे. आ बीजो अनुबन्ध कह्यो छे त्वंपद अने तत्पदनुं शोधन एटले जीव ब्रह्मनी ऐक्यता ने विषय कहे छे. आ त्रीजो अनुबंध छे. वादी कहे छे जे जीव ब्रह्मनी ऐक्यतातो बनेज नही केमके; तेल वेचनार गांगोतेली अने चक्रवर्ती महाराजानुं साम्य (बरोबर) पणुं होय नही. त्यारे सिद्धान्ती कहे छे के—उपाधि सहिततो गांगातेली अने चक्रवर्ती राजानी ऐक्यता बने नही ते सत्य छे पण ते गांगातेलीना घरनी समृद्धिरूप उपाधि तथा चक्रवर्ती राजानी समृद्धिरूप उपाधिनो त्याग करीने एक मनुष्य जातीमां ते बेउनी सरखामणी बने छे तेमज जीव तथा इश्वर ए बन्नेनी उपाधि अविद्याने माया ए बन्नेनो त्याग करीये तो जीव तथा इश्वर ए बे चैतन्यनी ऐक्यता बने छे. दृष्टान्त—आकाश एक छे परन्तु घडा तथा मठना उपाधिने लीधे घटाकाश तथा मठाकाश एवा भेदथी

 भासे छे; परन्तु घडारूप तथा मठरूप उपाधिने दूर करीने जोइए तो ते शुद्ध महदाकाशज जणाशे कारण के घडामांने मठमां महदाकाश जे अन्यत्र व्यापक छे तेज त्यां पण रहेलुं छे; परन्तु घडा तथा मठनी उपाधिने लीधे भेदनी कल्पना थाय छे. परन्तु उपाधि दूर करि वास्तविक रूपे जोतां आकाश एकज छे ने व्यापक छे तेम नित्य छे. घट अथवा मठनो नाश थवाथी तेमां रहेला आकाशनो नाश थनोज नथी. तेतो पोताना उपाधिथी छुटि जवाथी शुद्ध महदाकाशना धर्मने पामे छे. सिद्धान्त—तमः प्रधान अविद्या (अज्ञान), तेमां चैतन्यनो पडेलो आभास, अने चेतननुं अधिष्ठान कूटस्थ आत्रणे मळीने वेदान्तशास्त्रमां जीव कहे छे. इश्वर कहेतां सत्व प्रधानमाया, तेमां चैतन्यनो पडयो आभास, अने सत्व मायानुं अधिष्ठान चैतन्य. ए त्रण मळीने शास्त्रमां इश्वर संज्ञा आपेली

छे. तेथी इश्वर उपाधि माया अने जीव उपाधि अविद्या ए बन्नेनो त्याग करवाथी अधिष्ठान शुद्ध चैतन्यनी ऐक्यता बने छे. तेने ब्रह्मवेत्ता पुरुषो विषय कहे छे. आ त्रिजो अनुबन्ध विषय वर्णव्यो. हवे चोथा प्रयोजन नामना अनुबन्धनुं वर्णन कराय छे. प्रयोजनना बे अंश छे. तेमां प्रथम निरतिशय परमानन्दनी प्राप्ति १ अने मृत्यु जन्मादि दुःखना बीजरूप अविद्यानि वृत्ति २ आ चोथा अनुबन्धनुं वर्णन कर्युं. आवी रीते चार अनुबन्ध शास्त्रमां दर्शावेला छे. प्रेक्षावान् (जिज्ञासु) पुरुषोनी ग्रन्थमां प्रवृति अनुबन्ध चतुष्टय विना थती नथी चार अनुबंधो अनुक्रमे अधिकारी संबंध विषय अने प्रयोजन संक्षेपथी दर्शाव्या छे तेनुं ग्रंथमां विस्तारथी स्फुटीकरण करीशूं.

गुरु अने शिष्यना संवादे करीने आस्त्मात्म दर्शक ग्रन्थनो

आरंभ करुं छुं. संसार समुद्रथी तरवाने इच्छा राखनार, अध्यात्म, अधिभूत, अने अधिदैव एवा त्रण तापथी तपेल माणसे कोइ निष्काम कर्मना योगथी अथवा परमात्माना अनुग्रहथी समित्पाणी थइने (हाथमां फळ अथवा पुष्प राखीने) श्रोत्रिय एटले वेदनुं अध्ययन जेणे करेलुं एवा ब्रह्मज्ञानी गुरुना शरणे जवुं. अने मायिक पदार्थ नाशवान छे अने परमात्माज सत्य छे एम सत्य भाषण बोलवुं. केमके सत्य भाषणथी गुरु प्रसन्न थाय छे. कारण के गुरु मुमुक्षुजनोना सत्य भाषणने पोतानी सेवारूप माने छे, अने जो कोइ मोहथी मोहक पदार्थने साचो जाणी सत्पुरुष पासे वर्णन करे छे; तो सत्पुरुष अत्यन्त तेना उपर अप्रसन्न रहे छे. अने पुत्रादिक संसारना वैभवो नाशवान छे माटे ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु देवनी समीपतो एक परमात्माज सत्य छे एम संभाषण करवुं.

अने गुरु विषे ईश्वरथी पण अधिक जाणवुं; भक्ति राखवी. केमके ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मरूपज छे. त्यां श्रुति कहेछे जे-(ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति) अर्थ स्पष्ट छे. ते गुरुनी मन, कर्म, अने वचनथी स्तुति करवी. अने ते सेवाये करीने ब्रह्मचर्यादि धर्मो पाळवा. हवे गुरुना लक्षणने कहुंछुं. गुरु दयालुने ब्रह्मनिष्ठ होय छे. श्लोक—दयालुं गुरुं ब्रह्मनिष्ठं प्रसन्नं। अर्थ स्पष्ट छे उपर कह्या प्रमाणे गुणोथी सम्पन्न तेज गुरु अज्ञानने दूर करे छे. त्यां गुरुगीतानो श्लोक-गुकार स्त्वन्धकारः स्याद्रुकार स्तुविनाश कृत ॥ एवे अक्षरना अर्थरूप गुरुना शरणे रहेला मुमुक्षुजनो गुरुने नीचे बतावेली शास्त्रनी रीत प्रमाणे प्रश्न पुछे छे. श्लोक-तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्तितेज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः ॥ गुरुने नमस्कार करी प्रश्न करी सेवा पूर्वक ज्ञानने जाण, कारण के

तत्व जाणनार ज्ञानि पुरुषो तेवीज रीते ज्ञाननो उपदेश करे छे.

शिष्य प्रश्न करे छे हे गुरु कैवल्य मोक्षनुं साधन आप दया करी मने कहो. अने आपना अमृत रुप वचनना सेचनथी संसारना तापथी बळता हृदयने शान्त करो. त्यारे गुरु कहे छे; प्रथम अज्ञानी पुरुषो पापथी रोकाय तेवां भयंकर वचनो कहेवां; के ते वचनो सांभळी पापथी निवृत्ति पामे. जेमां रौरवादि नरकोनुं वर्णन कर्युं छे; ते भयंकर वचनो गरुड पुराण आदि ग्रन्थोमां जमयातनानां दुःखो वर्णन कर्यां छे. ते वर्णन करवानुं कारण के प्रथमतो पापकर्म करवुं नही. एवी रीते पापकर्मथी निवृत्त थवाय छे. पछी रोचक वचन कहेवां. रोचक वचन एटले जे प्राणी पुण्य करेछे ते आलोकनां तथा परलोकनां सुख भोगवे छे. एवां रोचक वचन कहीने सकाम कर्ममां प्राणीयोने प्रेरवा अने पछी स्वर्गादि

सुखमां दोष दृष्टि करवी. भगवद्गीतामां कह्युं छे जे श्लोक-तेतं-
लब्ध्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणेपुण्ये मृत्युलोकं विशन्ति। एवंत्रयी-
धर्म मनुप्र पन्नागतागतं कामकामा लभन्ते ॥ अर्थ—स्वर्गनी का-
मनावाळा पुरुषो इच्छित विशाल स्वर्गादिलोकमां जइने पुण्यक्षय
पामे छे त्यारे मनुष्य लोकमां अवतरे छे. ऋग्वेद सामवेद यजुर्वे-
दमां दर्शावेला यज्ञोने अनुसरनारा पुरुषो वारंवार कामनी इच्छा-
वाळा आ लोकमांथी परलोकमां चगडोळनी पेठे आवजा करे छे.
पण मुक्ति पामता नथी. अने पराधीनपणाथी अने इर्ष्याथी स्वर्गथी
मृत्युलोकमां ने मृत्यु लोकथी स्वर्गमां वारंवार जन्म मरणनां दुःखो
भोगवे छे. माटे स्वर्गादिक सुखनी कामना मुकीने केवल निष्काम
कर्म एटले परमेश्वर प्रीत्यर्थे कर्म करवाथी पापरुपी मेल धोवाय छे.
एटले नाश पामे छे. माटे अधिकारीजनोये अवश्य निष्काम कर्म करवां.

अने कर्म त्रण प्रकारनां छे, कर्म १ विकर्म २ अकर्म ३ तेमां श्रुति अने स्मृतिओमां विधान करेला अर्थ ने कर्म कहे छे. अने श्रुति स्मृतिमां निषेध करेला अर्थनुं नाम विकर्म कहेवाय छे. अने सर्व कर्मथी तूष्णी भावे रहेवुं ते अकर्म केहवाय छे आम पण्डित जनो कहे छे. अने कर्मनी गहन गति छे. त्यां श्री भगवाननुं वचन

श्लोक-

कर्मणोह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यंच विकर्मण: ।
अकर्मणोऽपि बोद्धव्यं कर्मणो गहना गति: ॥ १

अर्थ-कर्म विकर्म अने अकर्म ए त्रणेनो बोध थवो जोइये. कारण के कर्मनो मार्ग गहन छे. शास्त्रवेत्ता पुरुषो अधिकारी जनोने कर्म करवाने कहे छे. ते कर्म बे प्रकारनां छे. विहित अने निषिद्ध, तेमां विहित कर्म चार प्रकारनुं छे. नित्य १ नैमित्तिक

२ प्रायश्चित ३ निष्काम. संध्या होम जपादि करवु ते नित्य कर्म कहेवाय छे. चातुर्मास्य, दर्श पौर्णमा सयज्ञ, इष्टि, ग्रहण तथा पर्वणीना दीवसे श्राद्धादि कर्म करवु ते नैमित्तिक कर्म छे. अने करेला पापनी निवृत्ति माटे जप तप तथा कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रत अने तीर्थादीनु सेवन करवुं ते प्रायश्चित्त कर्म कहेवाय छे. अने शास्त्रोमां विहित कर्मो करवां. तथा निषिद्ध कर्म (पापकर्म) न करवां. शास्त्रनी आज्ञाथी करवानु कर्म ब्रह्मार्पण एटले ब्रह्म बुद्धिथी करवु. त्यां भगवद्गीतामां कह्यु छे के श्लोक-

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महवि र्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्
ब्रह्मैवते नगन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ॥ २

अर्थ-हे अर्जुन अग्निमां होमवानां साधन स्त्रुच अने सर्वो आहवनीय अने गार्हस्पत्यादि अग्निओ पण ब्रह्मरुप छे तथा ब्रह्मा अने

स्वा० होता जे होम करे छे. ते ब्रह्म छे. अर्थात् यजन अग्नि यजमान तथा स्वा०
११ क्रिया विगेरे सर्व ब्रह्म छे. आ प्रमाणे कर्म रूप ब्रह्मभावना करवी.
तेवी रीते कर्म कर्याथी अन्तःकरण शुद्ध थाय छे. माटे मोक्षनी इच्छावाळा पुरुषे पापरूप मळनी निवृत्ति सारु अवश्य ब्रह्मार्पण कर्म करवां. आ संक्षेपथी कर्मनां रूप दर्शाव्यां.

हे शिष्य हवे उपासनानी रीती कहुंछुं ते एक चित्तथी श्रवण कर. जेणे करी मननो विक्षेप नाश पामे छे. तेने ध्यान कहे छे, ते ध्यान करवामां योग्य वस्तु विद्यमान होय अथवा अविद्यमान होय पण केवळ गुरु अने शास्त्रना वाक्यथी जे मानस ज्ञान उत्पन्न थाय छे. ते ज्ञानने विषे विश्वास करीने गुरु अने शास्त्रना उपदेशमां सजातीय वृत्तिओना प्रवाहनुं ग्रहण करवुं अने विजातीय वृत्तिओनो तिरस्कार करवो तेने वेदवेत्ता पुरुषो उपासना ११

केह छे. जेम श्रुतिने विषे स्वर्ग १ मेघ २ मनुष्य लोक ३ पुरुष ४ यजमान अने तेनी स्त्री ५ ए पांचेने विषे अग्निरूपे उपासना करवानी कहे छे; पण स्वर्गलोकादि जोतां अग्नि रूपनथी तथापि गुरु अने शास्त्रना वचने करीने ते स्वर्गादिने विषे अग्निनी बुद्धि थाय छे. तेने ग्रन्थकारो उपासना कहे छे. प्रणवनी उपासना बे प्रकारनी छे. एक निर्गुण परमात्मानी उपासना करवी अने बीजी सगुण परमात्मानी उपासना करवी. तेमां निर्गुण परमात्मानी उपासना करवाथी मोक्षने पामे छे, अने सगुण परमात्मानी प्रणव रूपथी उपासना करेतो ब्रह्मलोकने पामे छे. एवा बे प्रकार छे. सर्वनाम रूपात्मक जे स्थूल सूक्ष्म अने कारणरूप जगत ते ॐकार रूपज छे. ॐकार ते ब्रह्म अने ब्रह्म ते ॐकार छे. ॐकार अने ब्रह्म ए बे शब्द एकज अर्थना वाचक छे. दृष्टान्त जेम घट

अने कुंभ ए बे शब्द कंबुग्रीवादि मत्रूप एकज अर्थने कहेनारा छे; तेम ब्रह्म अने ॐकार एकज अर्थने कहेनारा छे. केमके वाच्य अने वाचकनो भेद नथी. अने नाम अने नामी एकज छे. नामी शुद्ध परमात्मा अने नाम जे ॐकार ए बे भिन्न नथी एकज ॐकारने परब्रह्मनुं स्वरूप जाणीने पोतानाथी अभिन्न चिन्तवन करवुं जेम सुवर्णने विषे नाना प्रकारनां भूषणो कटक कुंडलादि कल्पित छे, तेम परब्रह्मने विषे आ सर्व प्रपंच कल्पित छे अने कल्पित पदार्थ अधिष्ठानथी जूदो नथी माटे प्रणवब्रह्म रूपज छे एमां संशय करवो नही. माटे जीव अने इश्वरनी ऐक्यता करवी; केमके जीवना चार पाद अने इश्वरना पण चार पाद छे. तेमां एक विराट १ हि-रण्य गर्भ २ अव्याकृत ३ तत्पदनो लक्ष्य चेतन साक्षी ४ ए चार पाद इश्वरना छे. विश्व १ तैजस २ प्राज्ञ ३ त्वं पदनो लक्ष्यार्थ

चेतन साक्षी ४ ए चार पादत्वं पदवाच्य जीवना छे. त्वं पदवाच्य जीवना अने तत्पद वाच्य इश्वरना पाद भगवान भाष्यकारे उपनिषदादिमां वर्णन करेला छे. जे अकार १ उकार २ मकार ३ अने अर्धमात्रा ४ ए प्रणवरूप परमात्मानुं अभेद चिन्तवन करवुं. (सोऽहं) एटले शुद्ध परमात्मा तेज हुं छुं एवी रीते उपासना करे तेने अहंग्रह उपासना कहे छे. ते अहंग्रह उपासनाये करीने परमपदने पामेछे ॐकारनी निर्गुण उपासना सर्वथी श्रेष्ट छे आ ॐकारनी उपासना माण्डुक्य उपनिषद्मां विस्तारथी वर्णवेली छे. ते उपासना सन्यासीयोनुं गोप्य धन छे. अन्तर वृत्तिवाळाने गुप्त धन छे. अने बाह्य वृत्तिवाळाने तो अधिकार नथी. माटे उत्तम मुमुक्षुजनोये प्रणवनुं ध्यान करवुं. एज अति अन्तरङ्ग साधन छे. अन्तरङ्ग एटले समीप छे. आम ब्रह्मविद पुरुषोनो तथा वेदान्ति-

येनो सिद्धान्त छे. इति अने शब्द ब्रह्मनी उपासना करवी. शब्द छे तेज ब्रह्म छे जेम शालिग्राममां विष्णु बुद्धि अने नर्मदेश्वरमां महादेव बुद्धि तेम ऋग्वेदादिकमां ब्रह्मबुद्धि करवी एम शास्त्रमां कह्यु छे माटे शास्त्र कहे तेज पाळवुं, ए उपासना कहेवाय छे. ते प्रमाणे उपासना करनार पुरुष स्वतन्त्र सुख भोगवे छे हवे बीजा प्रकारे उपासना कहेली छे. जे सनकादिकने नारदमुनिये नामथी कोण अधिक वस्तु छे एम पुछयु हतुं त्यारे सनकादिक ऋषियोये कह्युंछे के नामथी अधिकवाणी छे. अने वाणीथी अधिक प्रेरक एटले मन छे अने मनथी अधिक वृत्तियो छे, अने वृत्तियोथी अधिक चित्त छे, अने चित्तथी चिन्तवन अधिक छे, अने चिन्तवनथी अधिक ध्यान छे. अने ध्यान विषे इष्ट वस्तु प्राप्त थाय छे, अने तेथी अन्न अने अन्नथी बळ, अने बळथी अन्नरूप

स्वा० १३

पृथ्वी अधिक छे. एवी रीते तारतम्यताथी अधिक अधिक उपासनानी भावना करवानुं सनकादि योगीयोये कहेलुं छे. उपर कहेली बे उपासनाथी विक्षेपरूप आवरण दूर थाय छे. अने अज्ञानरूप आवरण तो ज्ञाने करीनेज दूर थाय छे. अने ज्ञानथीज मुक्ति मळे छे. प्रमाण (ज्ञानादेव कैवल्यम्) अर्थ-ज्ञानथीज मोक्ष पमाय छे. अने परब्रह्म परमात्माने जाणवाथीज जन्म मरणादि पाशथी मुक्त थवाय छे. प्रमाण ॥ देवंज्ञात्वा सर्व पापापहा निरिति ॥ अर्थ-परब्रह्म परमात्माने जाणवाथी सर्व पाप नाश पामे छे. प्रमाण ॥ तमेव विदित्वाति मृत्यु मेतिनान्यः पन्थाविद्यतेऽयनाय ॥ अर्थ-तेज परमात्माने जाणीने संसाररूप मृत्युना पाशथी मुकाय छे मोक्ष पामवाने बीजो कोईपण मार्ग नथी. ते माटे आत्मानुंज श्रवण, मनन करवुं ते योग्य छे. त्यां प्रमाण ॥ आत्मा

वारे श्रोतव्यो मन्तव्यो (द्रष्टव्यः) निदिध्यासितव्य श्चेति ॥
अर्थ-याज्ञवल्क्य मुनि कहे छे के हे मैत्रेयि आत्मा निश्चय करीने
जोवा योग्य छे. तथा साधने करी श्रवण करवा योग्य छे. मनन
करवा योग्य छे. तथा निदिध्यासन करवाने योग्य छे. आत्मा सर्वने
विषे रह्यो छे. त्यां प्रमाण ॥ घृतमिव पयसिनिगूढं भूतेभूतेवसति
विज्ञानम् ॥ अर्थ-जेम दूधनी अंदर घी गुप्त रह्युं छे. तेमज सर्व
भूतोने विषे विज्ञान (आत्मा) रह्यो छे. ते शुद्ध मनरूप मन्थनीये
करीने विचाररूप मन्थननो विषय करवा योग्य छे. विचार कर-
वाथीज ज्ञान प्राप्त थाय छे, अने ज्ञान प्राप्त थवाथी मुक्ति थाय छे
माटे विचार करवो, ते विचारने दर्शावे छे. प्रमाण ॥ कोऽहंकथ
मिदंजातं कोवा कर्तास्य विद्यते । उपादानं किमस्तीह विचारःसोस्य
चेदृशः ॥ अर्थ-हुं कोण छुं, आ जगत् केवी रीते उत्पन्न थयुं, आ

जगतनो उत्पन्न करनार कोण, आ दृश्यनुं उपादान कारण कोण हशे आवो विचार करवो तेनुं नाम विचार कहेवाय छे. आवा विचारनो उत्तर. हुं शब्दथी वाच्यार्थ जीव छे, अने लक्ष्यार्थ तो कूटस्थ आतमा छे, अने आ एतो इश्वर भाव अधिष्ठान एटले अ-धिष्ठान ब्रह्मरूप तत्पदनो लक्ष्यार्थ छे.

शिष्य कहे छे हे भगवन् वर्णाश्रमोना धर्मो कोण विषे रह्या छे ते कहो. गुरु कहे छे के हे शिष्य वर्णाश्रमना धर्मो शरीरने विषे रह्या छे, अने तुं तो वर्णाश्रमना धर्मोथी रहित शुद्ध आतम स्वरूप छे, एम दृढ निश्चय कर. शिष्य कहे छे हे भगवन् सृष्टिना कर्ता (क-रनार) इश्वरनुं स्वरूप कहो. गुरु कहे छे हे शिष्य समष्टि अज्ञा-नरूप माया अने ते मायाथी उपहित चैतन्य ए बे मळीने ईश्वर कहेवाय छे. जे ईश्वर छभग (ऐश्वर्य) थी युक्त छे. प्रमाण ॥

 स्वा०

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्ययशसः श्रियः। वैराग्य स्याथ मोक्षस्ये क्षण भगइति स्मृतम् ॥ सम्पूर्ण ऐश्वर्य १ सम्पूर्ण धर्म २ सम्पूर्ण जश ३ सम्पूर्ण लक्ष्मी ४ सम्पूर्ण वैराग्य ५ अने सम्पूर्ण ज्ञान ६ आ छनु नाम भग छे. आ छ ऐश्वर्यादि प्रतिबन्ध विना निरन्तर जेने विषे रहे छे ते भगवान जाणवा. अने बीजी रीते पण शास्त्रकारो वर्णन करे छे. जेमके प्रमाण ॥ उत्पत्तिंच विनाशंच भूताना मागतिंगतिम् । विद्यामविद्यांयो विद्यात्सवाच्यो भगवानिति ॥ अर्थ-जे पुरुष सर्वे भूतोना तथा भूतोत्पत्तिना कारणने, जाणे छे तथा भूतोना नाशने जाणे छे, तथा ते नाशना कारणने जे जाणे छे, तथा जे सर्वज्ञ पुरुष सर्व भूतोनी संपत्तिनी आवने जाणे छे, तथा आपदा गतीने पण जे जाणे छे अने जे सर्वज्ञ पुरुष विद्या तथा अविद्याने पण जाणे छे तेने भगवान कहे छे. ते भगवान सर्व का-

मनावाळा अधिकारी जनोये चिन्तवन करवा योग्य छे. तथा विजा प्रकारे चिन्तवन करवानुं बतावे छे ते परमात्मानुं अकार १ उकार २ ने मकार ३ रूपे चिन्तवन करवुं. तथा बीजा शास्त्रकारो कहेछे जे वैश्वानर १ हिरण्य गर्भ २ आने ईश्वर ३ उत्पत्ति स्थिति अने लय करनारनी अवस्थाओ कहेवाय छे. ते परमात्मा देवनुं ध्यान करनार परमात्मानेज पामे छे. प्रमाण ॥ यः पुनरेतात्त्रिमात्रेणो मित्य नेनै वाक्षरेण परमपुरुष मभीयात् सतमाधिगच्छति ॥ अर्थ-जे पुरुष अकार उकार अने मकार ए त्रणे मात्रावाळा ॐकार ए अक्षरथी परमपुरुषनुं चिन्तवन करे छे; ते पुरुष परम पुरुषने पामे छे.

शिष्य कहे छे हे गुरु परमेश्वरे सृष्टि करी, तेनो क्रम कृपा करी मने कहो तथा जगत सत्य छे या असत्य छे. तेनो उत्तर माराथी समजी शकाय तेवी रीते मारा उपर दया करीने कहो गुरु कहे छे

ए कचित्त थइ सांभळ पेहेलां जीवोने कर्मनां फल आपवा सारु हुं सृष्टि बनावुं आवी इच्छा थइ. जिवोने कर्मनां फल आपवा सारु आ सृष्टि रचुं; तथा ॥ एकोऽहं बहु स्याम् ॥ अर्थ-एक एवो हुं बहरूपे थाउं एवी इच्छा थइ. चैतन्यनी सत्ताये करीने मायाथी समष्टि बुद्धिरूप तथा त्रिगुणरूप महत्तत्व उत्पन्न थयुं तेमां पांच ज्ञानेन्द्रिय ते सत्व गुणनुं कार्य छे. तेमनाथी शब्दादि विषयनुं ज्ञान थाय छे. अने मनबुद्धि चित्त अने अहंकार अने चौद देव सत्व गुणथी उत्पन्न थया छे. प्राण अपान व्यान उदान अने समान आ पांच प्राण अने वाक् पाणी पाद पायु अने उपस्थ आ पांच कर्मेन्द्रियो ते रजो गुणथी उत्पन्न थयां छे. तथा शब्द स्पर्श रूपरस अने गन्ध ए पांच विषय तमो गुणथी उत्पन्न थया छे. उपर कहेला देवोनां तथा तेमना स्थाननां नाम. मनना चन्द्रमा १ बुद्धिना ब्रह्मा २ चित्तना

वासुदेव ३ अहंकारना रुद्र ४ श्रोत्रनी दिशा १ त्वगिन्द्रियना वायु २ चक्षुना सूर्य ३ जिह्वाना वरुण ४ घ्राणना अश्विनी कुमार ५ वाणीना अग्नि ६ पाणीना इन्द्र ७ पादेन्द्रियना विष्णु ८ गुदानायम ९ एवी रीते व्यष्टिने सृष्टिनी उत्पत्तिने कहे छे. सृष्टिनी उत्पत्तिनो क्रम महात्मा पुरुषोये बीजी अनेक रीते पण कह्यो छे. जेम परमात्माये माया सामी दृष्टि करी एटले ते माया थकी शब्द एक जेमां गुण छे एवुं आकाश उत्पन्न थयुं. आकाश थकी शब्द अने स्पर्श गुणवाळो वायु उत्पन्न थयो. वायु थकी त्रण गुणथी युक्त अग्नि उत्पन्न थयो, अग्नि थकी शब्द स्पर्शरूप अने रस आचार गुणोथी युक्त जळ उत्पन्न थयुं; अने जळ थकी शब्द स्पर्श रूपरस अने गन्ध आ पांचे गुणोथी संपन्न पृथ्वी उत्पन्न थइ. आकाशनो ध्वनि रूप शब्द एकज गुण छे ने वायुनो स्पर्श ना-

मनो गुण छे ते वायुमां शीशी आवो शब्द थाय छे ते आकाशनो गुण जाणवो. उष्ण अग्निनो रूप मुख्य गुण छे. तथा तेमां रहेलो स्पर्श वायुनो गुण छे अने भुक भुक शब्द थाय छे ते आकाशनो गुण जाणवो. मधुरपणुं ए जळनो गुण जाणवो. तथा तेमां शीत स्पर्श छे ते वायुनो गुण जाणवो, तथा सुंवाळापणुं तेजनो गुण छे. अने चुल चुल शब्द थाय छे ते आकाशनो गुण जाणवो. अने पृथ्वीमां कठणपणुं छे ते मुख्य पोतानो गुण छे, ने पृथ्वीमां जे मधुर रस जणाय छे ते जळनो गुण समजवो. तेथी श्वेत, पीतादि रंग जणाय छे ते तेजनो गुण छे अने गंध पृथ्वीनो मुख्य गुण छे. एवी रीते क्रमे करीने पांच भूतोमां कारणना गुणो उत्तरोत्तर कार्यमां मळवाथी सृष्टि उत्पन्न थइ छे. माटे इश्वरने समष्टि उपाधि छे अने जीवने व्यष्टि उपाधि छे. एटले स्थूल सूक्ष्म अने कारण

आ त्रण शरीर व्यष्टिनां कहेवाय छे. तेवी रीते इश्वरनां त्रण शरीर पण जाणवां परमात्माये आ जगतने अभिन्न उपादान कारणपणे रच्युं छे. अने ते जगत कल्पित एटले मिथ्या छे. सामान्य प्रकाश विशेष अंधारु अने रज्जुना साम्यपणाने लीधे आ सर्प छे एम रज्जु उपर भ्रम थाय छे. ते भ्रम जेम मिथ्या छे तेम जगत ब्रह्मने विषे कल्पित छे. एम वसिष्ट मुनिये योगवासिष्टमां कह्युं छे. जेम मृग तृष्णामां झांझवानुं जळ, तथा आकाशना पुष्पनी कल्पना, अने ससलाने शींगडुं, तथा वांझणीने छोकरो आ बधी वातो वाणीथीज मात्र कल्पित छे. पण विचारीने जोइये तो सत्य नथी. तेमज परमात्माना रूपमां मायानुं कार्य कल्पितज छे. एक ब्रह्मज सत्य छे. सर्वने विषे अस्ति भातिने प्रीयरूप पोतानुं स्वरूप जोयुं छे तेथी जगत परमात्मा रूपज छे. जेम जळना तरंगफेन अने पर-

पोटा ए जळ रूपज छे. तेम जगत ब्रह्म रूपज छे. अने बरफनां चोरसां चांदीना जेवां जोवामां आवे छे. पण सत्य रीते जळ छे. तेम जगत ब्रह्म रूपज छे भिन्न नथी. जेम सोनाना अनेक प्रकारना घाटकटक कुंडलादि सोनाथी भिन्न नथी. तेम ब्रह्मथी जगत भिन्न नथी. जेम लोढाना घाट असि, फरसी, शूल, त्रिशूल, जमैयो कटारी चप्पु विगेरे लोहथी भिन्न नथी तेम ब्रह्मथी जगत न्यारु नथी ब्रह्मरूपज छे. जेम खांडनां रमकडां खांडथी भिन्न नथी जेम दारु एटले काष्ठनी पुतळी तथा काष्टथी बनावेला हाथी घोडा काष्ठथी भिन्न नथी. जेम पथ्थरमां चित्रेला छडीदार तथा मूर्त्तियो तथा कोटकांगरा विगेरे पथ्थरथी भिन्न नथी पण पथ्थर रूपज छे. जेम मृत्तिकाथी उत्पन्न थयेलां भाजन (पात्र) घटशरावादि मृत्तिकाथी भिन्न नथी किन्तु मृत्तिकारूपज छे. सूत्रथी उत्पन्न थयेलुं वस्त्र सू-

त्रथी भिन्न नथी परन्तु सूत्ररूपज छे तेम आ जगत ब्रह्म स्वरूपज छे. माटे आ जगतना अभिन्न उपादान कारण परमात्माज छे. दृष्टान्त जेम करोळीयो पोताना मुखनी लाळथी जाळ रचीने पोतेज प्रवेश करीने रहे छे. अने ते जाळने पोतेज गळी पण जाय छे. तेम जगतनां उत्पत्ति स्थीति अने लय परमात्माथीज थाय छे. माटे जगत परमात्मा रूपज छे. प्रमाण ॥ हरिरेवजगत् जगदेव हरिःह-रितो जगतो नहि भिन्नतनु रिति ॥ अर्थ-हरि अने जगत जुदां नथी एकज छे. दृष्टान्त जेम स्वप्ननी सृष्टि निद्रारूपज छे. सिद्धान्त तेम परमात्माथी जगत जुदु नथी. मिथ्या एवुं अज्ञाननुं कार्यरूप मन छे. तेम नथी जुदु जणाय छे. माटे ते मनने जगत बेउ मिथ्या जाणवा. अने पोतानुं आत्म स्वरूपज सत्य छे. आत्माथी भिन्न वस्तु सर्व कल्पित छे.

शिष्य कहे छे. आ कल्पित जगतनी सृष्टिनी वृत्तिनो उपाय मने दया करीने कहो हुं तमारे शरणे आव्यो छुं माटे मारापर कृपा करीने कहेवा माटे योग्य छो गुरु कहे छे. कार्यनो कारणमां लय थाय, अथवा कारण सहित कार्य नाश पामे ते जगतनी वृ-त्तिनो उपाय छे. शंका-घटपटादि पदार्थोनुं ज्ञानतो छे परन्तु अज्ञान नाश पामतुं नथी तेनुं शुं कारण समाधान दृश्य पदार्थना ज्ञानथी तो अज्ञान वृद्धि पामे छे; पण अज्ञाननी निवृत्ति थती नथी. परन्तु शुद्ध ब्रह्मनी ऐकयता ज्यारे आत्म विषयक अपरोक्ष ज्ञानथी थाय छे. त्यारेज अज्ञान नाश पामे छे. शिष्य कहे छे. जीवतो कर्ता भोक्ता सुखी दुःखी अने संसारी (जन्म मरणादि धर्मवाळो) छे; तेनी परब्रह्मनी साथे ऐकयता केम थाय एवो मारा हृदयमां संशय छे. ते संशयने आपना कृपारूप वचनथी नाश करो. गुरु कहे छे.

आकाशनी पेठे ब्रह्म व्यापक छे. जेम घटनी उपाधिथी आकाशनुं नाम घटाकाश केहेवाय छे तेम अविद्यानी उपाधिथी आत्मा परिच्छेद्य जीव भावने पाम्या छे. दृष्टान्त जेम शुद्ध मनुष्य भूतना आवेशथी हुं मेलडी छुं तथा शीकोतर छुं एवा अनेक भूत प्रेत नाम लहे तदनु सारी कंपनादि (धुणवानी) क्रियायो करे छे; अने तेनुं खोटुं अभिमान धारण करे छे. पण ते माणसने कोइ शुद्ध मन्त्र युक्त जळ पाय तो भूतनो आवेश नाश पामे छे अने शुद्ध मनुष्यताने पामे छे. सिद्धान्त तेम शुद्ध ब्रह्म चैतन्यमां अविद्याना आवेशथी जीवभावनी प्राप्ति थइ छे. तेने सद्गुरु पोताना अमृतरुप वचनो पायतो अविद्यारूप भूत नाश पामे. ने पोताना शुद्ध स्वरूप सच्चिदानन्दताने पामे. त्रण देह त्रण अवस्था अने पांच कोशनो हुं साक्षी छुं. अने देहादिथी भिन्न छं एवी रीते पोतानु स्वरूप ब्रह्मथी

अभिन्न जाणवुं. तेने अपरोक्ष ज्ञान कहे छे ते अपरोक्ष ज्ञानथी परमानंदनी प्राप्ति थाय छे.

शिष्य कहे छे. हे गुरु देव तमे आगळ त्रण देह कही गया तेनुं स्वरूप मने पृथक् करीने कहो अने आत्माने ते देहनाथी न्यारो केवी रीते जाणवो ते कहो. गुरु कहे छे. हे शिष्य स्थूल सूक्ष्म अने कारण ए त्रण शरीर कारण अने कार्य भाववाळां छे. अने आत्मानुं कोइ कारण नथी. स्थूल देह जन्म मरण पामे छे. घटनी पेठे दृश्य छे. अने व्यभिचारी (परिणामी) छे. अने अस्ति १ जायते २ वर्धते ३ विपरिणमते ४ अपक्षीयते ५ नश्यति ६ आवा छ विकारवाळो छे. आ स्थूळ देहथी आत्मा जुदो छे. दृष्टा (जोनारो) छे अने जन्म मरणथी रहित छे. त्यां भगवद्गीतामां कह्युं छे जे.

नजायते म्रियते वाकदाचिन्नायं भूत्वा भविता वानभूयः ।
अजोनित्यःशाश्वतो वा पुराणो नहन्यते हन्यमाने शरीरे ॥

अर्थ-आत्मा जन्मतो नथी तेम कोइ वखत मरतो पण नथी. अने त्रणे अवस्थामां विकार विनानो छे. तेम पुराण छे एटले जेना पहेलां कोइ पण वस्तु नथी एवो छे. शरीर नाश पामवाथी ते आत्मा नाश पामतो नथी. ॥ श्रुति कहे छे के ॥ अविनाशी वाऽयमात्मा ॥ अर्थ-आत्मा नाश रहित छे. अर्थात् नाश विनानो नित्य छे. अने उपर बतावेला स्थूल देहथी जुदो छे. ते स्थूल देहने शास्त्रमां द्वारवती नगरी कहे छे. दृष्टान्त-जेम प्रवर्षण नामना पर्वतथी कुदीने आकाशरूप ऊर्ध्व मार्गथी कृष्ण परमात्माये द्वारवती (द्वारका) नगरीमां प्रवेश कर्यो छे. सिद्धान्त-तेम आ शरीररूप द्वारपुरी विषे कृष्णरूप जीवात्माये ऊर्ध्व मार्गरूप ब्रह्मरन्ध्रथी प्रवेश कर्यो छे. माटे शरीरने द्वारवती नगरी कहे छे. शरीरने रथनी उपमा पण अपाय छे. जेम आ शरीररूप रथ छे. अने

आत्मा तेमां बेसनार रथी छे. श्रुतिमां कह्युं छे जे श्लोक.

आत्मानंरथिनं विद्धि शरीररथ मेवतु ।
बुद्धिंतुसारथिं विद्धिमनः प्रग्रह मेवच ॥ १ ॥
इन्द्रियाणिहयानाहु र्विषयाँस्तत्र गोचरान् ।
आत्मेन्द्रिय मनोयुक्तोभोक्ते त्याहुर्मनीषिणः ॥ २ ॥

अर्थ-आत्माने रथी जाण देहने रथजाण बुद्धि सारथी छे मन राशो छे. इन्द्रियो घोडा छे अने विषयो रथमां बेशी फरनार आत्माने फरवाना रस्ता छे. आवी रीते आत्माने भोक्तारूपे वर्णन करे छे. ते आत्मा देहादिथी भिन्न छे. केमके देहपंच महा भूतोथी उत्पन्न थयो छे. जेमके परमानन्दनी इच्छाथी पांचे भूतमां दरेक भूतना समान बे बे भाग थया तेमां पांचेनो एक एक भाग जुदो स्थित रह्यो अने दरेकना बीजा भागना चार चार भाग थया ते चार

भाग पहेलां स्थित पांच भुतोनां अर्धमां पोताना अर्धने छोडी दइने दरेकचार भाग मळी जवाथी पञ्चीकृत पांच महाभूत थया. आनुं नाम पंचीकरण कहेवाय छे आ पंचीकृत पांच भूतथी स्पष्ट देखाय तेवो पचीस तत्ववाळो स्थूलदेह उत्पन्न थयो छे. हवे स्थूल देहना पचीस तत्त्वोना पंचीकरणनी रीत समजवा माटे नीचे कोष्टकमां जणावीये छीये. आकाशना रोम लाला (लाळ) निद्राने प्रसारण अने शिर आकाश अने वायुनां त्वचा एवी रीते एकबीजामां मळेलां छे. हवे पांच भूतनां तत्व कहीये छीये. (कट्याकाश, उदराकाश, हृदयाकाश, कंठाकाश, अशिराकाश ए पांच) कटआकाश १ उदर २ शिरआकाश ३ कठआकाश ४ महत् आकाश ५ आ पांच आकाशनां तत्वो छे. संकोचन १ चलन २ उत्क्रमण ३ धावन ४ प्रसारण ५ आ पांच वायुनां तत्वो छे. आळस १

कान्ति २ क्षुधा ३ तृषा ४ निद्रा ५ आ पांच तेजनां तत्वो छे. शोणित १ शुक्र २ मूत्र ३ स्वेद ४ लाळ ५ आ पांच जळनां तत्वो छे आस्थि १ मांस २ नाडी ३ त्वचा ४ रोम ५ आ पांच पृथ्वीनां तत्वो छे. आ पचीस तत्व स्थूल शरीरनां छे. ने बीजा पण विश्वात्माने कह्या छे. विश्वात्मानी अवस्थाने दर्शावे छे. जागृत अवस्था १ नेत्रस्थान २ वैखरीवाचा ३ स्थूल भोग ४ क्रिया शक्ति ५ रजोगुण ६ अकारमात्रा ७ विश्व अभिमानी ए विश्वनी सामग्री जाणवी. आ स्थूल देहनी सामग्री छे. ए पचीस तत्वनो स्थूल देह ते हुं नही. हुं तो तेनो दृष्टा छुं. अने ए देहदृश्य छे. ते नाशवान छे ने हुं अविनाशी छुं एवी रीते स्थुल देहने पोताना स्वरूपथी भिन्न जाणवो. आवी रीते स्थूल देहथी भिन्न आत्मानुं पृथक्पणुं दर्शाव्युं.

हे शिष्य हवे सत्तर तत्वना सूक्ष्म शरीरने कहे छे. पांच ज्ञा-

स्वा० २२

नेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय पांच प्राण तथामन अने बुद्धि मळीने सत्तर तत्वनुं लिङ्गशरीर छे. तैजसनी अवस्थाओ कहुंछुं. सूक्ष्म शरीरनी स्वप्न अवस्था कंठस्थान मध्य मावाचा विविक्त भोगज्ञान शक्ति अने सत्वगुण तथा उकार मात्रा एतो तैजस अभिमानी छे. ए सर्व लिङ्ग शरीरनी सामग्री छे. अने तुं तो तेनो ज्ञाता छे. माटे लिङ्ग शरीर तेतुं नही. अने लिंग देह शुभ अने अशुभ कर्मना फळने भोगवे छे. अने तुंतो अभोक्ता अकर्ता असंग अने निर्विकारी छे. इतिसंक्षेप । अने लिंग शरीरमां आठ पुरीयो रहेली छे.

शिष्य कहे छे महाराज ए आठ पुरीयोनां स्वरूप मने कृपा करीने कहो गुरु कहे छे पांच कर्मेन्द्रिय १ पांच ज्ञानेन्द्रिय २ चार अन्तःकरण ३ पांच प्राण ४ पांच महाभूत ५ अविद्या ६ काम ७ कर्म ८ आवा आठ पदार्थोने शास्त्रवेत्ता पुरुषोये पुर सं-

ज्ञाथी वर्णन करेला छे. अने ए पुरनो आत्मा साक्षी छे. पुर दृश्य छे अने आत्मा तेमनो द्रष्टा छे । आवी रीते सूक्ष्म देहनुं संक्षेपथी वर्णन कर्युं. हवे कारण देहथी भिन्न पणुं दर्शावे छे. हे शिष्य तुं कहेछे के हुं आत्माने जाणतो नथी तेनुं नाम अज्ञान अने तेने कारणदेह कहे छे. ते कारणदेह आठ तत्वनो छे. तेनां नाम सुषुप्ति अवस्था १ हृदयानि वास २ पश्यन्ती वाणी ३ आनन्द भोग ४ द्रव्यशक्ति ५ तमोगुण ६ मकारमात्रा ७ प्राज्ञ अभिमानी ८ आ आठ तत्वनो कारणदेह छे. एम विवेकी जनो कहे छे. तेने असत्वादि आवरण कहे छे. आत्मा छेज नाहि अने आत्मा देखातो नथी ए बे आवरण अज्ञाननांज छे. ते कारण देहनो तुं द्रष्टा साक्षी निर्विकारी छे. तेमां प्रमाण.

घटद्रष्टा घटाद्भिन्नः सर्व स्थाने घटोयथा ।
देहद्रष्टा तथा देहो नाह मित्य वधारयेत् ॥

अर्थ-जेम घटनो द्रष्टा घटथी भिन्न छे ते कोइ प्रकारे घटरूप थायज नहि तेमज देहनो द्रष्टा आत्मा कोइ कालमां देहरूप नथी. तेम निश्चय करवो. अने सुषुप्ति समयमां आ प्रपञ्च लय पामे छे. एक आत्माज रहे छे. त्यां श्रुतिनुं प्रमाण सुषुप्ति कालेसकले विलीने तमोऽभिभूतः सुखरूप मेति. अर्थ-सुषुप्ति कालमां सकल स्थूल सूक्ष्म प्रपञ्च लीन थाय छे अने छ ऊर्मीयो रहीत एटले जन्म मृत्यु देहनो क्षुत्पिपासा प्राणनो अने हर्ष शोक मननो धर्म छे. माटे ए षट् उर्मीयोनो हुं असंग साक्षी अने जाणनार छुं आवी रीते अज्ञानरूप कारण शरीरनं वर्णन करी बताव्युं. हवे त्रण अवस्थानुं वर्णन करुं छुं.

शिष्य कहेछे हे गुरु त्रण अवस्थाथी आत्मा न्यारो केवी रीते छे. तेमने कृपा करी कहो. गुरु कहे छे. हे शिष्य जाग्रत अवस्थामां

चिदाभासनी स्पष्ट त्रिपुटी एटले द्रष्टा, दृश्य अने दर्शन, ज्ञाताज्ञान अने ज्ञेय मन आदिक चौद इन्द्रियोनो वेहेवार ए त्रिपुटी थकीज जाग्रत अवस्थानो वहेवार सिद्ध थाय छे. अने ए त्रिपुटीनो आत्मा द्रष्टा छे, तथा जाग्रत अवस्थामां ज्ञाननी सात भूमिकाओ छे. शिष्य कहे छे. हे भगवन् सात भूमिकानां स्वरूप स्पष्ट रिते कहो. गुरु कहे छे के, त्रण भूमिकाओ साधनरूप छे, योगवाशिष्टमां कह्युंछे के, प्रमाण, " भूमिकात्रितयं त्वेतद्राम जाग्रति संस्थितम् " अर्थ-हेराम त्रण भूमिकाओ जाग्रत अवस्थानी छे. शुभ इच्छा, सुविचारणा, तनुमानसा, ए त्रण जाग्रत अवस्थानी भूमिका छे. सत्वापत्ति, ४ असंग शक्ति, ५ पदार्थ भाविनी, ६ अने तुर्या ७ आ सात भूमिकाओ भगवान वशिष्ट मुनिये योगवाशिष्टमां कहेली छे. जेमके " श्लोक-

ज्ञानभूमिः शुभेच्छास्यात् प्रथमा समुदा हता ।
विचारणा द्वितीयास्या तृतीया तनुमानसा ॥ १ ॥
सत्वापत्ति श्चतुर्थी स्यात् ततोसंसक्तिनामिका ।
पदार्थभाविनी षष्ठी सप्तमी तुर्यगास्मृत्ता ॥ २ ॥

अर्थ-शुभ ईच्छा ए पहेली ज्ञान भूमिका, विचारणा बीजी, त्रीजी तनुमानसा, चोथी सत्वापत्ति, पांचमी असंसक्ति, छठ्ठी पदार्थ भाविनी, सातमी तुर्या नामनी भूमिका छे, तेना क्रम अने लक्षणो वशिष्ट मुनिये रामचंद्रजीने दर्शावेलां छे. त्यां प्रमाण " स्थितः किंमूढ ए वास्मि प्रेक्षेहं शास्त्र सज्जनैः वैराग्य पूर्व मिच्छेति शुभेच्छे त्युच्यते बुधैः । शास्त्र सज्जन संपर्क वैराग्याभ्यास पूर्वकं । सद्विचार प्रवृत्तिर्या प्रोच्यते साविचारणा ॥ विचारणा शुभेच्छाभ्यां इन्द्रियार्थै ष्वसक्तता । यत्रसा तनुता मेति प्रोच्यते

तनुमानसा भूमिका त्रितया भ्यासा च्चित्तेर्थ विरतेर्वशात् । सत्वात्मनि स्थिते शुद्धे सत्यापत्ति रुदाहृता ॥ दशा चतुष्टया भ्यासाद् संसर्ग फलातुया । रूढ सत्वच मत्कामा पोक्ता संसक्ति नामिका ॥ भूमिका पंचका भ्यासात् स्वात्मा रामतया भृशं । आभ्यंतराणां बाह्यानां पदार्थाना मभावनात्॥ परप्रयुक्तेनाचिरं प्रयत्नेनाव बोधनम् पदार्थ भाविनी नाम षष्ठी भवति भूमिका ॥ भूमिषट्क चिराभ्यासा द्भेदस्यानुप लम्भनात्यत् स्वभावै कनिष्ठत्वं साज्ञेया तुर्यगागतिः ॥ अर्थ-हुं मूढनी पेठे शुं बेठा छुं श्री सद्गुरु तथा सच्छास्त्रनी सहायताथी हुं मारा स्वरूपने जोऊंतो ठीक. एवी वैराग्यादि साधन संपत्ति सहित जे इच्छा थाय ते शुभेच्छा नामनी प्रथम भूमिका समजवी. गुरु शुश्रूषा तथा स्वधर्ममां निरत रही श्रवण मननमां प्रवृत्ति थाय ते बीजी सुविचारणा नामनी भूमिका जाणवी. विचारणा अने शुभेच्छाना

परिपाक बलथी इन्द्रियो विषयने ग्रहण न करे तेटली मननी सूक्ष्मता थाय, अर्थात् सविकल्प समाधि प्राप्त थाय त्यारे तनुमानसा नामनी त्रीजी भूमिका प्राप्त थइ एम समजवुं. अने त्रण भूमिकाना अभ्यास बलथी बाह्य विषयोमां अत्यंत उपराम थवाथी चित्तनी शुद्धि अर्थात् माया तथा तेना कार्य रहित स्वस्वरूप आत्माने विषे त्रिपुटीना लय पूर्वक निर्विकल्प समाधि रूप जे स्थिति थाय तेने सत्वापत्ति नामनी चोथी अवस्था जाणवी. अने चारे भूमिकाना अभ्यासथी बाह्य तथा अन्तर विषयोना संगरहित समाधिना परिपाक बलथी वृद्धि पामेल परमानन्द स्वरूप ब्रह्मना साक्षात्कार युक्त एवी चित्तनी अवस्थाने असंसक्ति नामनी पांचमी भूमिका कहे छे. ए पांच भूमिकाना अभ्यासथी आत्माने विषे अत्यन्त रति प्राप्त थवाथी बहारना तथा अंदरना पदार्थोनी प-

तीतिन थाय अने घणीवार शिष्यो जगाडवानो प्रयत्न करे त्यारे पदार्थोनुं भान थाय ए प्रकारनी अवस्थाने पदार्थ भाविनी नामनी छठ्ठी भूमिका कहे छे. आ छ भूमिकानो घणा काळ अभ्यास थवाथी भेद प्रतीत थाय नहि अने केवळ स्वरूपने विषेज चित्त स्थिति करीने रहे त्यारे तुरीया नामनी सातमी भूमिका सिद्ध थइ एम समजवुं. आ सात भूमिकाओमां पहेली त्रण भूमिकाओ ब्रह्म विद्याना साधनरूप छे; पण ब्रह्म विद्यानी कोटीमां गणाती नथी. कारण के त्रण भूमिका सुधी भेदने विषे सत्यत्व बुद्धि मटती नथी. एटला माटेज प्रथम त्रण भूमिकाने साधनरूप कहे छे. अने चोथी भूमिकामां स्थित पुरूषने ब्रह्मवित् कहे छे. पांचमी भूमिकामां रहेला पुरुषने ब्रह्मविद्वर कहे छे. अने छठ्ठी भूमिकामां रहेला पुरुषने ब्रह्मविद्वरीयान् जाणवो. तथा सातमी भूमिकामां रहेलो योगी

ब्रह्मविद्वरिष्ठ कहेवाय छे. एम शास्त्रोमां प्रसिद्ध छे; एवी रीते सात भूमिकाओनो अर्थ दर्शाव्यो. । हवे बोध १ साम २ अने सान्त्व ३ ना रूपने बताविये छीए. मुमुक्षु माणस सद्गुरुनी सेवाथी आत्म स्वरूपने पामे तेनुं नाम बोध कहेवाय छे. गीतामां कह्युं छे के "त-द्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया." अर्थ स्पष्ट छे आवो बोध थया पछी सर्व प्राणीने विषे ब्रह्मबुद्धि थाय छे गीतामां कह्युं छे के.

विद्याविनय संपन्ने ब्राह्मणे गविहस्तिनि ।
शुनिचैवश्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ १ ॥

अर्थ-ब्रह्मज्ञानी पुरुषोए विद्वान ब्राह्मणने विषे गायने विषे हाथीने विषे कूतराने विषे अने चण्डालने विषे समान बुद्धि राखवी जोइए. आवी बुद्धि थाय तेने साम कहे छे अने चैतन्य विना कोइ पदार्थ छेज नहि आवी बुद्धिने सान्त्व कहे छे. इति ए

अवस्थाओ जाग्रत अवस्थामां रहेली बुद्धिने विषे छे. वस्तु विचार करतां तो हुं एक ब्रह्मज छुं; भूमिकादि आत्माने विषे कल्पित छे. कल्पित पदार्थ अधिष्ठानने बाध करी शकतो नथी. जाग्रत अवस्था बुद्धिनी छे, अने दृश्य छे, एटले नाशवान छे; अने हुं आत्मा एनो द्रष्टा अविनाशी अने अविकारी छुं, एवी रीते जाग्रत अवस्था कही. हवे स्वप्नावस्थाने दर्शावुं छुं. जाग्रत अवस्थामां जे सांभळे अथवा देखे अथवा अन्तःकरणमां संकल्प विकल्प करे ते विषयोना ज्ञानथी वासनाओ उत्पन्न थाय छे. ते वासनाओ कंठमां वाळना अग्रभागथी पण सूक्ष्माहिता नामनी नाडी रहीछे; ते नाडीने वासनाओ निद्रामां संस्काररूप थइने संद्दीप्य विषय अने विषयानुज्ञान विषय थाय छे. तेने स्वप्न अवस्था कहे छे. ते स्वप्न अवस्थाथी हुं भिन्न छुं. तथा ते स्वप्न अवस्था दृश्य छे, अने हुं तेनो द्रष्टा छुं.

तथा कूटस्थ निर्विकारी अव्याभिचारी अने तेनो साक्षी छुं. तथा ते अवस्था साक्ष्य छे. तथा व्यभिचारी छे. माटे स्वप्नावस्था ते हुं नही. हुं तेथी भिन्न छुं. एवी रीते स्वप्नावस्था वर्णवी. हवे सुषुप्ति अवस्थाने कहुंछुं. गाढ निद्रा आवे त्यारे अन्तःकरण अज्ञानमां अत्यन्त सूक्ष्मताने पामे छे. तेने सुषुप्ति अवस्था कहे छे. ते गाढ निद्राथी जाग्रत अवस्थाने पाम्या पछी कहे छे के आज निद्रामां में कांइ पण जाण्यु नही. सुखथी सुतो हतो; आवो अनुभव कराय छे. माटे एम जोतां आत्मा सुषुप्तिनो साक्षी छे. केम केम नआादि सुषुप्तिमां रहेतां नथी अने सुषुप्ति मट्या पछी जाग्रत अवस्थामां सुखनो अनुभव करे छे. माटे आत्मा तेनो साक्षी छे. कह्युं छे जे। सुषुप्ति कालेसकले विलीने इति। अर्थात् अहंकार तथा अन्तःक-रणनो लय थाय छे; माटे आत्माज साक्षीरूपे अबाधित रह्यो छे.

अने सुषुप्तिनो द्रष्टा छे. सुषुप्ति दृश्य छे. अने त्रणे अवस्थानो एक एक अवस्थामां अभाव छे. जाग्रतमां स्वप्न नथी; अने स्वप्नमां सुषप्ति नथी; तथा सुषुप्तिमां जाग्रत नथी. माटे ए त्रणे अवस्थाओमां जेम मणकामां दोरो रहे छे तेम हुं आत्मा साक्षी अन्वयपणे रहेलो छुं. माटे हुं आत्मा ते अवस्थाओनो साक्षी छुं ते अवस्थाओ साक्ष्य छे. आवी रीते त्रण अवस्थाओ संक्षेपथी बतावी.

शिष्य कहे छे. हे गुरु त्रण अवस्थाओथी आत्मानुं भिन्न पणुं मने कह्युं हवे पांच कोशनां स्वरूप मने कृपा करीने कहो. गुरु कहे छे. हे शिष्य कोशनां भिन्न भिन्न रूप कहुं छुं तुं सावधान थइने सांभळ. प्रथम अन्नमय १ प्राणमय २ मनोमय ३ विज्ञानमय ४ आनन्दमय ५ आवी रीते पांच प्रकारना कोश छे. जेम म्यान तलवारने ढांके छे तेमज आ पांचे कोश आत्माने ढांके

छे. माटे आवरण करनारा छे. माता तथा पिताये खाधेलुं अन्न जठराग्निथी पाकीने उत्तम मध्यम अने कनिष्ठ भावने पामे छे. तेमां अन्ननो उत्तम भागमन भावने पामे छे. मध्यम भाग त्वचा रुधिर मांसमेद अस्थि मज्जा आ छ धातुओना भावने क्रमे करीने पामे छे. अने अधम भागनी विष्ठा थाय छे. आवा परिणामी अन्नथी स्थूल देह उत्पन्न थयो छे. जेमके माता पिताए भक्षण करेला अन्नथी वीर्य अने शोणित थयां छे, अने तेनाथी आ स्थूल देह बन्धायो छे. माटे ते अन्न रूपज छे. केमके अन्न खावाथी वृद्धि पामे छे. अने अन्नरूप पृथ्वीमां लय पामे छे. माटे अन्नमय कोश परिणामी अने नाशवान छे. अने हुं आत्मा अपरिणामी अविनाशी अने साक्षी रूपे रह्यो छुं. आअन्नमय कोशनुं वर्णन कर्युं. हवे प्राणमय कोषने कहुंछुं. पांच कर्मेन्द्रियो तथा प्राणअपान व्यान उदान

अने समान आ मळीने प्राणमय कोष कहेवाय छे. अने प्राण सर्व इन्द्रियादिना जीवनरूप छे. केमके देहनुं रक्षण करनार प्राण छे. क्रिया शक्तिवाळो प्राण आत्माने ढांकेछे तेम प्रतीत थाय छे. पण विवेक दृष्टिथी जोइये तो प्राण क्रिया शक्तिवाळो छे अने हुं आत्मा अक्रिय अनीह तथा आकाशनी पेठे व्यापक छुं; अने कर्म इन्द्रिय तथा प्राणादिकनो साक्षी छुं. माटे प्राणमय कोश ते हुं नहि हुं आत्मा तेनाथी भिन्न छुं. आम प्राणमय कोश संक्षेपथी जणाव्यो. हवे मनोमय कोशने कहुंछुं. पांच ज्ञानेन्द्रिय, जेमनाथी शब्दादि विषयो ग्रहण थइ शके छे. तथा संकल्प विकल्पात्मकमन जेने जितवाथी आखुं जगत जीताय छे. तथा ते मन बहुज चंचल छे गीतामां भगवानने अर्जुने कह्युं छे जे–

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद् दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥

अर्थ-हे कृष्ण चंचल, देह तथा इन्द्रियोने क्षोभ करनार बलवान अने दृढ मनने कबजे राखवा धारु छुं परन्तु वायु जेम कबजे रहेतो नथी तेम ते पण कबजे रही शके ते मनथी. एवा चंचल मनथी आत्मा जाणी शकातो नथी. जेथी आत्मा जाणी शकाय छे ते मन विषय छे. एटले दृश्य छे. केमके कोइ पुरुष वात करतो होय तेने सांभळनार माणस कहे छे के तमे वात करी पण मारुं मन कोइ बीजा पदार्थमां हतुं तेथी तमारी वात ध्यानमां रही नथी. माटे फरीथी कहो. माटे ते उपरथी जणाय छेके मन द्रव्यछे. ते मननी कळा अन्न अने जळना भक्षण करवाथीज वृद्धि पामे छे. अने खवातुं पीवातुं नथी त्यारे क्षीण थाय छे. ते वात बृहदारण्य-

क उपनिषद्‌मां उद्दालक मुनि अने श्वेत केतुना संवादथी छठ्ठा अ-ध्यायमां सविस्तर वर्णन करेली छे. अने सनत्कुमारे नारदने कही छे. माटे मन अन्ननो विकार छे. अने आत्मा तेनो साक्षी अविकारी अने तेनाथी भिन्न छे. आवी रीते मनोमय कोश कह्यो हवे वि-ज्ञानमय कोश कहुंछुं निश्चित आत्मरूप बुद्धि छे. केमके शास्त्रो करवां तथा शास्त्रो कहेवां ते बुद्धि बळथीज थाय छे अने चार वेद, उपनिषद् व्याकरणादि छ शास्त्र विष्णु पुराणादि अढार पुराण धर्मसिन्धु तथा मनुस्मृति आदि स्मृतियो अने महाभारतमां वर्ण-वेल इतिहासादिशास्त्रो ज्ञान विज्ञानादि बुद्धिना बळथीज थाय छे. ने ते शास्त्रो रचनाराओ कहे छे जे मारी बुद्धि शास्त्रना अर्थने धारण करवामां कुशळ छे. अने अज्ञानी छुं एटले पोताना स्वार्थ के परमार्थने जाणतो नथी माटे ज्ञानपणुं अने अज्ञानपणुं ए बे

प्रकारनी बुद्धि छे. तथा ते बुद्धि दृश्य छे अने हुं आत्मा द्रष्टा छुं. ए विज्ञानमय कोष हुं नही हुं शुद्ध निर्विकारी छुं. आवी रीते विज्ञानमय कोष संक्षेपथी जणाव्यो हवे आनंदमय कोषने कहुंछुं. कर्म फळना अभावथी सुषुप्ति थाय छे. अने अन्तःकरण वृत्ति सहित पोताना कारणरूप अज्ञानमां लय पामे छे. एटले अज्ञान युक्त आत्म स्वरूपना आनन्दने पामे छे. विद्वान लोको तेने आनन्दमय कोष कहे छे. शंका आत्म स्वरूपने पामीने पाछो स्वप्न तथा जागृत अवस्थामां आववुं न जोइये; केमके सुषुप्ति अवस्थामां आत्म स्वरूप सुखनी प्राप्ति थाय छे. अने जागृत तथा स्वप्न अवस्थामां विक्षेप थाय छे. एटले दुःख रह्यां छे. माटे अन्तःकरण सहित जीवात्मा शुं करवा जागृत अवस्थामां आवे छे तेनुं कारण कहो. समाधान क्रिया सहित कारणनी अत्यन्त निवृत्ति थइ नथी माटे

जागृतादि अवस्थामां आवे छे. दृष्टान्त जेम घडाने रसीथी बांधीने हाथमां रसी राखी अगाध जळमां डुबाववाथी घडो देखातो नथी. परन्तु रसी खेंचेतो तरत घडो बहार आवे छे. सिद्धान्त तेम बुद्धिरूप घडाने अनादि काळनी वासनारूप दोरीथी दृढ बांधीने प्रारब्ध कर्मनी वासनाना भोगरूप छेडाने राखीने गाढ निद्रारूप जळमां नाखवाथी आनन्द स्वरूप आत्माने पामे छे. पछी प्रारब्धरूप दोरी खेंचवाथी बुद्धिरूप घडो जागृत तथा स्वप्नने पामे छे. अने त्रण प्रकारना आनंद अन्तःकरणमां थाय छे. अने कहे छे के हुं आजे निद्रामां सुखथी सुतो हतो एवी रीते सुषुप्तिना आनन्दने संभारीने जागृत अवस्थामां राजी थाय छे. माटे सुषुप्तिरूप आनन्दमय कोश ते हुं नही हुंतो तेनो दृष्टा छुं अने तेतो दृश्य छे. अने हुं तेनो प्रकाशक आत्मा छुं. अने सच्चिदानन्द तथा निर्वि-

शेष परमानन्द स्वरूपछुं " हे शिष्य एवी रीते पांच कोषनुं वर्णन कर्युं छे. आवां रीते उपर कहेला त्रण शरीर त्रण अवस्था तथा पांच कोषथी पोताना स्वस्वरूपने भिन्न जाणे तेज कृतार्थ थाय छे. अने तेज विद्वान अने मुक्त छे. ब्रह्म नामावळीमां कह्युं छे के त्रण देह त्रण अवस्था अने पंचकोष तथा भुक्त भोग्य आदि सर्वेना विवेचनथी ते सर्व देहादि दृश्य छे; अने हुं तेनो दृष्टा साक्षी आत्मा छुं. एवो जेने दृढ निश्चय छे; ते पुरुष मुक्त छे. अने तेज विद्वान छे. तेमज गार्गिये जनकराजानी सभामां सर्व ब्राह्मणोने कह्युं छे. जे आ आत्मज्ञानवान याज्ञवल्क्य तेज पुरुष छे. अने तेज विद्वान छे. माटे हे ब्राह्मणो आ विपश्चित (पण्डित) याज्ञवल्क्यने तमे बधा वारंवार नमस्कार करो. आ वात सविस्तारथी तो बृहदारण्यक उपनिषदना पांचमा अध्यायमां कहेली छे. हे शिष्य

जे पुरुष सत्य ब्रह्मने जाणे छे तेज पुरुष स्पष्ट रीते ब्रह्मनु कथन करी शके छे. ब्रह्मनो अपरोक्ष (प्रत्यक्ष) अनुभव कर्यो होय तेज ब्रह्मनु वर्णन करी शके छे. ते विना भूमा ब्रह्मनं कथन संभवे नही. माटे प्रत्यक्ष विज्ञान ते मुमुक्षुजनोनुं कर्तव्य छे.

शिष्य कहे छे हे भगवन् भूमाब्रह्मरूप भगवाननु स्वरूप कोना विषे रह्युं छे तमने कहो. गुरु कहे छे. हे शिष्य भूमा भगवान पोताना माहिमामां रहेला छे. एटले स्वस्वरूपने विषे रहेलु छे. जेम समुद्रने कोइ जलाशयनो आश्रय नथी तेम भूमा एटले व्यापक ब्रह्म सर्वे पदार्थोमां रह्युं छे. अने कल्पित जगतना आश्रयरूप पोतेज छे. हे शिष्य तेज भूमा निचे छे ने उपर पण छे. अने सर्वे दीशाओमां पण व्यापीने रहेला छे. तथा भूत भाविष्य अने वर्तमान आ त्रणे काळमां व्यापीने रह्या छे. अने देश काळ तथा सर्वे

वस्तुमां भूमा आत्माज रह्या छे. भूमाथी कोइ चीज भिन्न नथी. आवी रीते भूमा भगवानना ज्ञानथी जीवन् मुक्ति तथा विदेह मुक्तिने पामे छे. जे पुरुष सद्गुरु अने शास्त्रना उपदेशथी संशयन दूर करीने पोताना स्वरूपने यथार्थ जाणे छे. ते पुरुष जीवन मुक्त कहेवाय छे. अने तेज पुरुष आत्म रतिने पामे छे. कह्यं छे के. प्रमाण। यस्त्वात्म रतिरेवस्यादात्म तृप्त श्चमानवः। अर्थ- जे पुरुषने आत्माने विषेज रति एटले प्रीति छे. तेनेज आत्माना आनन्दथी तृप्ति थाय छे. दृष्टान्त-जेम कोइ कामी पुरुष विदेशमां रहीने पोतानी स्त्रीमां प्रीति राखे छे. सिद्धान्त तेमज जीवन मुक्त पोताना स्वरूपमांज प्रीतीवाळो छे. तेने आत्म रतिवान जाणवो. अने आत्म क्रीडावाळानेज विद्वान लोको ब्रह्मवेत्ता कहे छे. ते ब्रह्मवेत्ता आत्मामांज क्रीडा करे छे. दृष्टान्त जेम बाळको मळीने

अन्योअन्य क्रीडा करे छे. सिद्धान्त तेमज ब्रह्मवेत्ता वेदान्त शास्त्रना अवलोकन समयमां आनन्दरूप आत्मामांज क्रीडा करे छे. तेने आत्म क्रीडावान जाणवो. तथा समाधि अने व्युत्थानकाळ आ बे प्रकारनी ज्ञानीनी अवस्था छे. ए व्युत्थानकाळे तो वेदान्तनुं चिन्तवन करनार विद्वान आत्म क्रीडावान छे. अने मनन भोजनादि समयमां आत्मानुं चिन्तवन करनार पुरुषने विद्वानो आत्म रति कहे छे. निर्विकल्प अने सविकल्प एवी रीते समाधि बे प्रकारनी छे. ध्याताध्यान अने ध्येयने सविकल्प समाधि कहे छे. अने ते त्रिपुटी रहित समाधिने निर्विकल्प समाधि कहे छे. ते समाधिमां विद्वानने आनन्द प्राप्त थाय छे. तथा ते विद्वानने आत्म मिथुन कहे छे. अने निर्विकल्प ब्रह्मानन्दने प्राप्त थयेला विद्वानने आत्मानन्द एवा नामे करीने कहे छे. आवी रीते जीवन मुक्तिनुं स्वरूप संक्षेपथी ब-

तात्युं. हवे विदेह मुक्तिने कहुछुं. हे शिष्य आवो आत्मज्ञानी प्रारब्ध कर्मना भोग थवाथी शरीरने नाश करे छे. अने प्रारब्धे करी शरीरनो नाश थया पछी ब्रह्मनेज पामे छे. तेने विदेह मुक्ति कहे छे. अने तेवो ज्ञानी कोइने वश थतो नथी. तथा परिछिन्न पदार्थनी इच्छा करतो नथी. केमके विद्वान सर्वना आत्मारूप छे. तथा सर्वमां प्रतिबन्ध रहित आत्माज विचरे छे. तेने स्वराज्यपणुं कहे छे. एज भूमा आत्माने जाणवानुं फळ छे. अने तेज विद्वान पुरुषनुं जगत्कर्ता इश्वररूपे वर्णन कर्युं छे. हे शिष्य तेज विद्वान पुरुषथी नाम रूपादि प्रपञ्च उत्पन्न थयो छे. जेम रज्जुथी सर्प बुद्धि उत्पन्न थाय छे. तेम विद्वान पुरुषथी आ जगत उत्पन्न थयुं छे. आयज्ञादिक कर्मो तथा तेमनां स्वर्गादिक फळो उत्पन्न थयां छे. तथा मन्त्र ब्राह्मण अने सघळो वेद ए ब्रह्मवेत्ता विद्वान पुरुषथी उत्पन्न थयो छे.

तथा जे पुरुषने भूमा परब्रह्मनुं स्वरूप साक्षात्कार थयुं छे. ते पुरुषने जन्ममरणादि दुःखो निवृत्त थाय छे. जीवात्मा पोताना ज्ञानवळथी शुभ अने अशुभ सर्व संसारने देखे छे. आ भूमानुं स्वरूप उपनिषदोमां सविस्तर वर्णन करेलुं छे. विस्तारना भयथी हुं विशेष जणावती नथी. आवी रीते भूमा भगवाननुं स्वरूप संक्षेपथी दर्शाव्युं.

शिष्य कहे छे हे भगवन् वामदेव सर्वात्म भावने पाम्या छे; एवुं आपे कह्युं ते वात मने समजाय तेवी रीते दया करीने कहो. गुरु कहे छे हे शिष्य एक वखत सनकादि ऋषि अने प्रजानो संवादरूप इतिहास थयो छे. तेने संक्षेपथी कहुंछुं. एकाग्र चित्तथी सांभळ. ब्रह्माना सनकादि चार मुख्य पुत्र छे. विरक्त एवा ते ऋषियो त्रण लोकमां लोकोना कल्याण करवा माटे फरेला छे. आत्मज्ञानवाळा महात्मा सनकादि ऋषियो सात्विक प्रजाने जो-

इने कहेवा लाग्या के हे प्रजाओ आत्म ज्ञानथीज सुख पमाय छे. ते आत्माथी भिन्न बीजुं बधुं दुःखरूप छे. आवुं तेमनुं वचन सांभळतां पण मोहने वश थयेला लोको सनकादि ऋषियोना वचननो अनादर करीने विषयनां सुख भोगववा माटे नाना प्रकारनां कर्म करवा लाग्या. तेमांथी सत्वगुणी प्रजाये विचार कर्यो के मनुष्यादि जीवोनां शरीर परमात्माये निर्गुण ब्रह्मने जाणवा सारु रच्यां छे. मनुष्यनुं शरीर विषयना भोग भोगववा माटे बनाव्युं नथी. एवो विचार करीने शमदमादिसाधनथी युक्त सात्विक लोको ऋषियो पासे जइ प्रणाम करीने शुद्ध ब्रह्मनी प्राप्ति माटे पोतानो बधो अभिप्राय जणाववा लाग्या. ते सात्विक प्रजानां वचन सांभळीने कृपावाळा सर्वज्ञ सनकादि ऋषियो ब्रह्मज्ञाननी प्राप्ती करवा माटे उत्साहवाळा मुमुक्षुजनोने कहेवा लाग्या. हे प्रजाओ

आत्मा वाणी तथा मननो विषय नथी. श्रुति कहे छे के । यतो-
वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसासह । अर्थ उपर कह्यो तेज छे.
जाति गुण अने क्रियाथी रहित छे. माटे मन अने वाणीथी अ-
गोचर छे. आवुं कहीने सनकादि ऋषियो चाळवा लाग्या अने
तेमना गया पछी तेमना कहेला उपदेशथी ते सर्व अधिकारीयोमां
वामदेव नामना अधिकारीनुं शरीर निवृत्त थयुं छे. अदृष्टरूप मा-
विना वश होवाथी सनकादि ऋषियोना उपदेशथी पण ते वाम-
देवने ते जन्ममां आत्म ज्ञान थयुं नही. परन्तु फरीथी मातापिताना
गर्भमां प्राप्त थया पछी प्रतिबन्ध निवृत्त थवाथी पूर्वे सनकादी
ऋषियो पासेथी श्रवण करेली ब्रह्मविद्याथी विषयोमां दोषदृष्टि
पूर्वक वैराग्य उत्पन्न थयुं. ते वैराग्यना प्रतापथी वामदेवने गर्भमां
अपरोक्ष आत्मानो अनुभव थयो. पछीथी ते वामदेवे गर्भवासमां

रही पोताना मित्रोने आवां वचनो कह्यां छे के. हे मित्रो पूर्व जन्ममां हुं तमारी साथे हतो ते वखते परिछिन्न देहादिमां आत्म बुद्धि होवाने लीधे परिच्छिन्न भावने प्राप्त थयो हतो. अने हाल गर्भवासमां सनकादिना उपदेशनुं स्मरण थवाथी आत्मज्ञान थयुं छे. तेथी पोताना अद्वैत शरीरनुं भान थयुं छे. के माराथी कोइ वस्तु भिन्न नथी. सर्वने आत्मरूप जाणुंछुं. अने पूर्वादि दिशाओ आकाशादि पांच भूत इन्द्रादि देवताओ ए मारुंज स्वरूप छे. कारण के तेओ माराथी भिन्न नथी. अने ब्रह्माथी आरंभी स्तम्ब पर्यन्त सर्व पदार्थो मारुंज स्वरूप छे. अने जे पुण्यपाप युक्त जीवो छे ते संपूर्ण मारुंज स्वरूप छे. माराथी जुदुं नथी. आत्माना ज्ञानने लीधे गर्भनुं दुःख मने लेश मात्र पण स्पर्श करी शकतुं नथी. हे सन्मित्रो आत्मज्ञान तमारे अवश्य संपादन करवा योग्य छे.

एवी रीते आत्मज्ञानने विषे श्रद्धा उत्पन्न कराववा माटे बोधने उत्पन्न करे एवां अनेक प्रकारनां वचनो कह्या पछी वामदेव मुनि गर्भथी बहार आवीने पृथ्वी स्वर्ग तथा ब्रह्मलोक पर्यंत जीवन मुक्त थइने फरवा लाग्या. ते वामदेव आत्म ज्ञानमां सनकादि ऋषियोना समान छे. अने लोकान्तर सुखनी इच्छाथी निवृत्त छे. कोइ प्रकारनो जीविका सारु उद्यम करता नथी. ते निर्मल अंतःकरणवाळा वामदेव प्रारब्ध कर्मनी समाप्ति माटे मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोकना भोग भोगव्या पछी ते प्रारब्ध कर्मनो क्षय थवाथी विदेह मोक्षने पाम्या छे. अने त्यार पछी सात्त्विक लोको आश्चर्य पामीने परस्पर कहेवा लाग्या के आ वामदेव कोइ विशेष पुण्यना प्रतापथी बधा अधिकारीयोमां संसारना बन्धनथी छुटी गया दृष्टान्त. कादवना समूहमां पडेला गायोना समूहमांथी अदृष्ट वशात्

कोइ गाय बहार निकळी आवे छे. सिद्धान्त तेमज आ वामदेव संसाररूप कादवथी मुक्त थया छे. दृष्टान्त. सद्गुरुनी पासे अध्ययन करनार अनेक छात्र वर्गमांथी कोइ एक छात्र विद्या मेळवे छे. सिद्धान्त तेमज अमारा जेवा अधिकारीयोमां वामदेवज ब्रह्मविद्याने पाम्या छे. तेथी आ वामदेव पुरुष छे. अने अमे बधा नपुंसक छीए. कारण के पुरुषत्वनी प्राप्ति आत्म ज्ञानथी थाय छे. बधा अधिकारियो आवो विचार करी विवेक अने वैराग्यादि साधनोथी जीव अने ब्रह्मनो अभेद निश्चय करीने जीवन मुक्तिने पाम्या. अने वामदेवनी पेठे प्रारब्ध कर्मना भोग भोगव्या पछी विदेह मुक्तिने पाम्या. आ इतिहास विशेषथी तैतरीय उपनिषदमां कहेलो छे. आवी रीते वामदेवना संक्षेप आख्या नथी जीव अने ब्रह्मना एकत्वनो अनुभव दर्शाव्यो.

शिष्य कहे छे. हे भगवन् त्वंपदवाच्य जीव अने तत्पदवाच्य इश्वरना एकत्वनुं व्याख्यान मारा हृदयमां यथार्थ समजाय तेम दया करीने फरीथी कहो. गुरु कहे छे त्वंपद तथा तत्पदना साधनमां वेदान्त शास्त्रनी सहाय जोइये. अन वेदान्त शास्त्रना श्रवणमां षड्लिङ्गनी सहाय जोइये. ते छ लिङ्ग प्रसंगोपात जणावीये छीये. प्रकरणना आरंभ अने अन्तमां एक अर्थ प्रतिपादन होय तेने उपक्रमोप संहार नामनुं पहेलुं लिङ्ग कहे छे. अने अद्वैत स्वरूपनुं वारंवार अनुसंधान करवुं तेने अभ्यास नामनुं बीजुं लिङ्ग कहे छे. अने श्रुति विना प्रमाणनी अविषयतारूप अने स्वप्रकाशरूप अद्वैत तथा पुराणनुं नाम अपूर्वता नामे त्रिजुं लिङ्ग जाणवुं. अने अभेद ज्ञानना फलनुं प्रतिपादन करवुं तेने फळ नामे चोथुं लिङ्ग कहे छे. अने अद्वैत ज्ञाननी स्तुति अने द्वैत ज्ञाननो निषेध

तेने अर्थवाद नामनुं पांचमुं लिङ्ग कहे छे. कार्य अने कारणना अभेद बोधथी एक शुद्ध आत्मज्ञानने योग्य दृष्टान्तनी उपपत्तिने छठ्ठुं लिङ्ग कहे छे. आ छ लिङ्गथी वेदान्तना वाक्यना अभिप्रायथी अद्वैत परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थाय तेने श्रवण कहे छे. माटे श्रवणमां षट्लिङ्गनी समजुतीनी जरूर छे. ते छ लिङ्ग पंचदशी आदि ग्रन्थोमां समजाव्यां छे. जेमके प्रमाण ॥ उपक्रमादिभिर्लिङ्गै स्तात्पर्यस्य विचारणात् । असङ्गं ब्रह्ममायावी सृजत्येष महेश्वरः ॥ इत्यादि छ लिङ्गना व्याख्यानने जाणवाथी वेदान्त शास्त्रना श्रवणनी दृढता थाय छे. ने त्यार पछी त्वंपद तथा तत्पदनुं साधन करवुं. त्वंपद तथा तत्पदनां साधन बे प्रकारनां छे. एक वाच्यार्थ अने बीजुं लक्ष्यार्थ. प्रथम त्वंपदनुं स्वरूप दर्शावुंछुं. चिदाभास सहित बुद्धि तथा कूटस्थ ए जीव त्वंपदनो वाच्यार्थ छे. अने बुद्धि

अने चिदाभास रहित शुद्ध चैतन्य ते त्वंपदनो लक्ष्यार्थ छे. अने माया सहित ब्रह्म तत्पदनो वाच्यार्थ छे. तथा माया रहित ब्रह्म तत्पदनो लक्ष्यार्थ छे. माया उपाधिवाळो ईश्वर अने अविद्यारूप उपाधिवाळो जीव ए बेउ भाइ छे. दृष्टान्त जेम एक राजाना बे छोकरा होय तेमांथी मोटा छोकराने राज्यनो सर्व अधिकार आपे छे अने नाना छोकराने पोतानी जीवीका निर्वाह चाले तेटलुं आपे छे. सिद्धान्त तेमज शुद्ध चैतन्य नामे राजा छे. तेना माया सहित चैतन्य अने अविद्या सहित चैतन्य आवा बे पुत्रो छे. तेमां मायोपाधि चैतन्यरूप मोटो पुत्र पोताना पिता ईश्वरना आनन्दरूप राज्यने भोगवे छे. अने अविद्योपाधिवाळो जीवरूप नानो छोकरो कर्मना परिपाकरूप सुख दुःखादि प्रारब्ध कर्मने भोगवे छे. अने इश्वर कर्मना फळने आपनार छे. अने सर्व जीवोना नियन्ता छे.

स्वा०

तेना नियममां रहे छे माटे जीव फटायो छे. अने राजाने रैयत कर भरे छे तेमज जीव निष्काम कर्मों करीने ईश्वरने अर्पण करे छे. ते करने इश्वर स्वीकार करीने तेना उपर प्रसन्न रहे छे. भगवद्गीतामां कह्युं छे जे

पत्रं पुष्पं फलंतोयं योमेभक्त्या प्रयच्छति
तदहं भक्त्यु पहतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥

अर्थ जे जीव पत्र पुष्प अने फळआदि मने भक्तिथी अर्पण करे छे तेने माळी पुष्परूप भेट राजाने अर्पण करवा जायतो पोताना नोकरे प्रेमथी लावेली ते वस्तुने राजा स्वीकार करे छे. तेम हुं स्वीकार करुछुं. आवी रीते त्वं अने तत्पदनो अर्थ दर्शाव्यो. शिष्य कहे छे. भगवन् महा वाक्यनो उपदेश दया करीने कहो. गुरु कहे छे. हे शिष्य शास्त्रोमां विधि अने निषेध

बे प्रकारे उपदेशनी रीत कही छे. तेमां सच्चिदानन्दादि शब्दो-
थी आत्मानो बोध करावनार वाक्योने विधि कहे छे. जेमकु।
सत्यं ज्ञान मनन्तं ब्रह्म । आत्मा सत्य स्वरूप ज्ञान घन अने
आनन्दरूप छे. अद्वितीय अस्थूल अभेद अने सच्चिदानन्द स्वरूप
छे. आवां वाक्योने विधि कहे छे. अने आदृश्य प्रपंच नाशवान
छे. आत्मा तेनाथी भिन्न छे. अने आ जगत आत्माने विषे छेज
नही आवी रीते नेति नेति वाक्यथी निषध करतां जे बाकी रहे
छे. ते आत्म स्वरूप छे आवां वाक्योथी थनारो उपदेश सत्य
छे. अने ते वाक्योने निषेध मुख उपदेश कहे छे. दृष्टान्त एक
शिवशर्मा नामे ब्राह्मण हतो तेने विष्णु शर्मा नामनो छोकरो हतो.
ते छोकरो पोताना बापने पुछवा लाग्यो के, हे पूज्यपाद पिताजी
हुं गान्धार देशना राजाने ओळखतो नथी माटे ते राजा मने

बरोबर ओळखाव्यो. तेवुं पुत्रनुं वचन सांभळवाथी तेने राज्य सभामां लइजइने तेना पिता कहे छे जे. आ सिंहासननी चोतरफ बेठेला माणसो राजा नही आवुं पोताना पितानुं वचन सांभळीने विष्णुशर्माये निश्चय कर्यो के सिंहासन उपर बेठेलो छे ते राजा छे. सिद्धान्त वाच्यार्थनो निषेध करीने निषेधनो प्रकाशक आत्मा छे. आवो बोध थाय छे. तेनुं नाम निषेध मुख उपदेश कहेवाय छे. दृष्टान्तमां केहेला पिताने स्थाने श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु छे अने तेना पुत्रने स्थाने साधन चतुष्टय संपन्न अपरोक्ष ज्ञानवान मुमुक्षु शिष्य छे. अने गान्धार देशने स्थाने जगत छे. राजाने स्थाने शुद्ध परब्रह्म छे. अने सभाने स्थाने तो वैराट हिरण्य गर्भ अव्याकृत वैश्वानर सूत्रात्मा छे. आवी रीते गुरुना निषेधरूप वाक्यथीज परब्रह्म ईश्वरनु विज्ञान थाय छे. अने विश्व तैजस अने प्राज्ञरूप

स्वा०

वाच्यार्थ ते हुं नही. हुंतो सच्चिदानन्द परिपूर्ण अखंड निर्विकार अद्वैत छुं. अर्थात् हुं मन अने वाणीनो विषय नथी अने मृत्तिकामां जेम घडो कल्पित छे तेम मारा विषे आ जगत कल्पित छे. एक हुं ब्रह्मज सत्य छुं. आवा उपदेशने अध्यारोपापवादथी थनार उपदेश कहे छे. हे शिष्य चार वेदना महा वाक्योने कहुंछुं. ते सावधान थइ श्रवण कर. प्रज्ञानब्रह्म। अहंब्रह्मास्मि। तत्वमसि। अयमात्मा ब्रह्म। आ अनुक्रमे चारे वेदनां महा वाक्यो छे. तेमनो अर्थ-ब्रह्म ते हुं छुं अने आत्मा ब्रह्म छे. ते चारे महा वाक्योनो अर्थ छे. आवी रीते अभेद विचारथी आत्मानो साक्षात्कार करवो. ते अत्यन्त अन्तरंग साधन छे. अने ते विचार भाग त्याग लक्षणाथी करवो.

शिष्य कहे छे. भगवन् भागत्याग लक्षणानुं स्वरूप दृष्टान्त

४०

साथे कहो. गुरु कहे छे. लक्षणा त्रण प्रकारनी छे. जहत् लक्षणा अजहत् लक्षणा अने जहदजहत् लक्षणा. जे वाक्यना पदना सर्व अर्थनो त्याग कराय तेने शास्त्रोमां जहल्लक्षणा कहे छे. दृष्टान्त. गंगायांघोषः एटले गंगा नदीना जलना प्रवाहमां गायोनो समूह रह्यो छे. तेमांथी (गंगायां) पदना अर्थने त्याग करीने तेना कीनारानुं ग्रहण कराय छे. एटले कीनारापर गायोनो समूह रह्यो छे आवा वाक्यनो स्वीकार कराय छे. आने शास्त्रमां जहल्लक्षणा कहे छे. आ लक्षणा महा वाक्यना विचारमां उपयोगी नथी. केमके ब्रह्म अद्वैत अने निर्गुण छे. तेमां त्याग करवानी कोइ वस्तु नथी. वाक्यना सर्व अर्थनुं ग्रहण करीने बीजुं मांही उमेराय छे तेनुं नाम अजहत् लक्षणा कहे छे. दृष्टान्त शोणितो धावति अर्थ. लाल वर्ण दोडे छे; त्यां एवो अर्थ करवानो जे सचेतन प्राणी दोडे छे.

तेमज आ ब्रह्म विचारमां अधिक ग्रहण करवा योग्य वस्तुज नथी. केमके ब्रह्मथी बीजी कोइ सत्य वस्तुज नथी. माटे ब्रह्म विचारमां अजह लक्षणा उपयोगी नथी. अने महा वाक्यमांतो त्वं तथा तत्पदना केवल लक्ष्यार्थनुं ग्रहण छे. उपाधिना त्यागरूप भागत्याग लक्षणा छे तेने शास्त्रमां जहदजह लक्षणा कहे छे. दृष्टान्त सोऽयं देवदत्तःयः पुराकाश्यां दृष्टः ॥ अर्थ जे काशीपुरीमां दीठो हतो ते आ देवदत्त छे. काशीमां घणा वैभव युक्त जोवामां आव्यो हतो ते ह्यालमां अत्यन्त वैराग्यवान् कोपिन अने कमण्डलुने धारण करनार छे. एवाने जोइने अंतःकरणमां भ्रान्ति थाय छे. आ पुरुषने में काशीमां जोयो हतो ते आ हशेके नही होय आवी रीते वैभव अने वैराग्यनी उपाधिने लीधे भ्रान्ति थाय छे. ते बे उपाधिनो अने देशकालनो त्याग करीने केवल शरीरनेज

जोतां तो देवदत्तज छे एवी बुद्धि थाय छे. अने भ्रान्ति नाश पामे छे. सिद्धान्त. तेम तत्त्वं असि ए महा वाक्यना त्रण पदनो अर्थ ते तुं छे. तेमां तत् एटले ईश्वर सर्वज्ञत्यादि उपर कहेलां छ ऐश्व-र्यथी युक्त छे. अने त्वंपदनो अर्थ अल्पज्ञपणुं पराधिनपणुं इत्यादि अविद्योपाधिथी युक्त जीव छे. ते ईश्वरने जीवना विशेषणरूप भा-गनो त्याग करवाथी शुद्ध चैतन्य निर्विकार अने कूटस्थनुं ब्रह्मनी साथे एकत्व थाय छे. कूटस्थ निर्विकारी व्यापक ब्रह्म तेज हुं छुं आवो असिपदनो अर्थ छे. ब्रह्म ते हुं अने हुं आत्मा ते ब्रह्म एम अभेदपणे निश्चय करवो तेज सर्वोपनिषदनो सिद्धान्त छे. अने जगत कल्पित एटले त्रणे कालमां मिथ्या छे. अने हुं ब्रह्म सच्चिदानंद स्वरूप छुं. अने अस्ति भाति प्रियनाम अने रुप ए पांचथी जगत भासे छे जेम दुधमां घी रह्युं छे तेम हु सर्वमां

स्वा०

रह्योछुं ए अस्ति शब्दनो अर्थ छे. जेटलुं देखाय छे ते मारी सत्ताथी सचेतनपणाने पामे छे. जेम अग्निना संयोगथी तपेलुं लोढुं प्रकाशवाळुं जोवामां आवे छे तेम. आ भाति शब्दनो अर्थ छे जेम साकर पदार्थमां नांखवाथी पदार्थ मिष्टताने आपे छे तेमज ब्रह्मना आनन्दथी आ सर्व प्रिय लागे छे आ प्रिय शब्दनो अर्थ छे. तथा सत्चित् अने आनन्द जगत छे अने नामने रूप कल्पित छे. जगत कंइ वस्तु छे नहीं. दृष्टान्त जेम पटना तन्तुओने भिन्न भिन्न करेतो वस्त्र देखातुं नथी. सिद्धान्त. तेम सच्चिदानंद स्वरूप जोइ एतो नाम रूपवाळुं जगत देखातुं नथी. अधिकारी जनोए एवो निश्चय करवो तेज योग्य छे. कह्युं छे के प्रमाण

श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामिय दुक्तं ग्रन्थ कोटिभिः ।
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्याजीवो ब्रह्मैव नापरः ॥

અર્થ જે કરોડો ગ્રન્થોથી કહેલું છે તેને હું અર્ધા શ્લોકથી કહુછું કે બ્રહ્મ સત્ય છે. જગત મિથ્યા છે. ને જીવ તથા બ્રહ્મ એકજ છે. પ્રમાણ. સર્વં ખલુ ઇદં બ્રહ્મ અર્થ આ સર્વ જગત બ્રહ્મજ છે. અને સત્ય અસત્ય સર્વ સત્પરમાર્થરૂપ બ્રહ્મજ છે. આ સર્વ જગત ચિદ્રૂપથી પ્રકાશ પામે છે; માટે જગત કલ્પિત છે. અને ચૈતન્ય સત્ય છે. ભાગવતમાં દેવોએ કહ્યું છે કે પ્રમાણ.

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिंनिहितं च सत्ये ।

सत्यस्य सत्यं ऋुतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः ॥

અર્થ સત્યવ્રતવાળા, સત્ય જેને મુખ્ય છે એવા, ત્રણે કાળમાં સત્ય સ્વરૂપ, જગતના આદિ, સત્યની વિષે રહેલા, અને સત્યના અંત વખતે પણ રહેલા, સત્ય ભાષણ શમદમાદિથી સંપન્ન એવા આપ પરમાત્માના શરણમાં આવેલા છીએ. માટે ઇશ્વર સત્યરૂપ છે. વળી કહ્યું છે

के सर्व प्राणीयोने विषे आत्मा अन्वयथी रह्यो छे. अने परमात्माने विषे सर्वभूत रह्यां छे. एम जे जाणे ते फरीने जन्ममरणने पामतो नथी. इति आवी रीते पोताना शिष्यने बोध आपी गुरुये तेना संदेह दूर कर्या छे. हवे शिष्य पोताना अनुभवने गुरु पासे प्रगट करे छे. शिष्य कहे छे हे गुरुदेव आपना अमृतरूप वचननुं श्रवणाञ्जलीथी पान करवाथी संसारना त्रण प्रकारना ताप शान्त थया छे अने असंभावना तथा विपरीत भावनानो नाश थवाथी स्वरूपनी प्राप्ति थइ छे तेथी आपने वारंवार जेम सूर्यनारायण पोताना सेवके भक्तियुक्त थइ अर्पण करेला दीपकनो स्वीकार करी तेना उपर प्रसन्न थाय छे; तेम आप स्वीकार करी प्रसन्न थवा योग्य छो. केमके आपतो सर्वात्म स्वरूप छो. शास्त्रमां कह्युं छे के.

गुरु र्ब्रह्मा गुरु र्विष्णु र्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवेनमः ॥

अर्थ स्पष्ट छे गुरुना चरण कमल त्रिविधिना तापने दूर करनारा छे. अने संसाररूप समुद्रने तरवामां नौकारूप छे. ते गुरुना चरण कमलमां मारा साष्टांग नमस्कार छे. आप नृसिंह श्रीधर अने वामनरूप छो. आपनी कृपाथी जीव ब्रह्मरूप थायछे तेवा गुरुने देवरूप जाणी तेमनी भक्ति करवी योग्य छे. श्री गुरुना चरणने वन्दन करवाथीज सर्व पाप नाश पामे छे अने गुरुना चरण कमल क्षालनक रीते जलनुं आचमन करवाथी सर्व तीर्थमां स्नान करवानुं फल प्राप्त थाय छे. माटे गुरुनुं चरणोदक विवेकी पुरुषे ग्रहण करवुं, तथा ते सद्गुरुनुं स्मरण करवुं, अने तेमना नामनोज मन्त्र जपवो, अने तेमनी आज्ञामां वर्त्तवुं. गुरुने इश्वर एकरूप जाणवा, अने गुरु मूर्त्तिनुं नित्य ध्यान धरवुं, ने तन मन अने धन अर्पण करीने गुरुनी पासे नम्रताथी रहेवुं. कारण

स्वा०

के गुरु ए अखंड अविनाशी सर्व व्यापक ब्रह्मरूप दर्शाव्युं छे, एवा गुरुथी बीजुं कोइ श्रेष्ठ नथी. जेणे पोताना स्वरुपनो अपरोक्ष अनुभव करावेलो छे एवा मोक्षना दाता एक गुरुज छे. केमके मोक्षतो गुरुकृपाथीज साध्य छे. आ सर्व जगत गुरुरूपज छे; माटे सर्वात्म गुरुनी पूजा करवाथी सर्व जगतनी पूजा थाय छे. एवा गुरुदेवनुं सदाए आराधन करवुं; केमके ते गुरु आनंदना आनंद स्वरूप छे, अने आनन्द आपनार अने प्रश्नना ज्ञानने आपनार पोते ज्ञानयुक्त योगीयोमां श्रेष्ठ अने स्तुति करवा योग्य छे. संसाररूप रोगना वैद्यरूप छे. शास्त्रमां कह्युं छे जे.

यावज्जीवंत्रयो वन्द्या वेदान्तो गुरुरीश्वरः ।
आदौ ज्ञानाप्तयेपश्चात् कृतघ्नत्व निवृत्तये ॥

अर्थ मनुष्ये पोताना जन्म पर्यंत पहेलां ज्ञाननी प्राप्तिने

माटे अने ज्ञान प्राप्त थया पछी कृतघ्नत्व दोषनी निवृत्तिने माटे नमस्कार करवो जोइए. प्रथम ज्ञान थवा सारु वेदान्तनुं श्रवण तथा गुरु अने इश्वरनुं सेवन करवुं जोइए, अने ज्ञान थया पछी जेनाथी ज्ञान थयुं ते वेदान्त शास्त्र तथा गुरु अने ईश्वर ए त्रणेनुं सेवन करे तो कृतघ्नतानो दोष निवृत्त थाय छे. माटे ते दोष मटाडवा सारु देह रहे त्यां सुधी परिपूर्ण अखंड एकरस परमात्मानुं स्मरण करवुं ते स्मरणथी दोष युक्त संसारना पारने पमाय छे. अने अभेद स्वरूपे हनुमानजीनी पेठे नमस्कार करवा जमके श्लोक.

देहबुध्ध्या तु दासोऽहंजीव बुध्ध्या तदंशकः ।
आत्म बुध्ध्यात्वमेवाह मितिमे निश्चला मातिः ॥

अर्थ अशुभ देहनी दृष्टिए तो हुं तमारो दास छुं. अने उ-

पाधि युक्त जीव दृष्टिथी तमारो अंश छुं. अने आत्मदृष्टिथी तो तमे ने हुं एकज स्वरूपज छीए. अने श्री गुरुदेवनु अभेद भावथी देहरूप शिवालयमां ध्यान करवुं. प्रमाण--

देहोदेवालयं प्रोक्तं जीवो देवः सदाशिवः ।
त्यक्त्वा ज्ञानं च निर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ॥

अर्थ देह देवालय रूप छे तेमां जीवरूप सदा शिवना अज्ञानरूप निर्माल्यनो त्याग करीने ईश्वर भावथी पूजन करवुं. हे भगवन् तमारी दयाथी मारो मोह नाश पाम्यो. स्वात्मनिरूपणनो श्लोक. इत्थंनिबोध्य गुरुणा शिष्यो हृष्यन्प्रणम्यतत्पदयोः ।
स्वानुभव सिद्धमर्थं स्वयं मवान्तर्विचारयामास ॥

अर्थ आ प्रमाणे श्री सद्गुरु ए जेने बोध आपेलो छे एवो शिष्य अन्तःकरणमां प्रसन्न थयो सतो अनुभवथी सिद्ध अर्थने

पोताना अन्तःकरणमां विचार करवा लाग्यो. शिष्य आवी रीते गुरुनी स्तुति करीने पोताना अनुभवने दर्शावे छे. हे गुरु स्थूलादि देह मारामां नथी तथा मने तेमां ममत्व नथी. अज्ञान तथा ज्ञान पण मारामां नथी तथा शुभ अने अशुभथी पण रहित छुं. जीव तथा ईश्वर ते हुं नहि मन बुद्धि इन्द्रियो पांच प्राण अने पांच महाभूतो ते हुं नही. ज्ञाता ज्ञान अने ज्ञेय ध्याता ध्यान अने ध्येय प्रमाता प्रमाण अने प्रमेय आत्रिपुटि आत्मामां नथी. हुं तो चैतन्य रूप छुं. देह अने देही मारामां नथी. मारे विषे बंध तथा मोक्षपणुं नथी. अने रागी तथा त्यागीपणु मारामां नथी. मारामां पूर्वादी दीशाओ छेज नही. अने लघु तथा दीर्घ पणु मारामां नथी तथा द्वैत पणुं मारामां नथी. उत्पत्ति स्थितिने प्रलय आवा त्रण विकारथी रहित छुं. तेम मारा विषे उत्तम मध्यम अने कनिष्ठ

पणुं नथी. सद्गुण तथा असद्गुणथी रहित छुं. मारामां देश काळ-रूप कांइपण वस्तु नथी तथा सजातीय अने विजातीय भेदथी रहित छुं. तथा वृद्धि अने क्षयथी रहित छुं. तेमज विश्व तैजस अने प्राज्ञ ते हुं नही. हुंतो तुरीयातीत छुं' शीक्षा लेनार तथा शीक्षा आपनार ए मारे विषे कल्पित छे. तथा दानी अने कृपण-पणाथी रहित छुं. तथा दासपणुं अने स्वामीपणुं मारा मानथी किं बहुना आ सर्व प्रपञ्च मारामां नथी. अने हुं शुद्ध स्वरूप निर्विकार अने परिपूर्ण छुं. आवी रीते शिष्य पोतानो अनुभव बतावी कृतार्थ थयो. संचितक्रियमाण अने प्रारब्ध ए त्रण प्रकारनां कर्म छे; अनेक जन्ममां करेलां कर्मने संचित कहेछे गीतामां कह्युं छे के ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुःपण्डितं बुधाः। अर्थ जेनां कर्मज्ञान रूप अग्निथी नाश पाम्यां छे. तेने विद्वान पुरुषो पण्डित कहे छे.

ते संचितकर्मज्ञानी पुरुषनांज नाश पामे छे. अने ते ज्ञानी पुरुष वर्त्तमान शरीरना बलथी जे कर्म करे छे. तेने क्रियमाण कर्म कहे छे. ब्रह्मरूप एवा ते ज्ञानीने क्रियमाण कर्म पण बन्धन करी शकतां नथी. अने जे कर्म वडे आ शरीर प्राप्त थाय छे तेने प्रारब्ध कर्म कहेछे. ते प्रारब्ध कर्मज्ञानी तथा अज्ञानी सर्वने भोगववुं पडेछे. प्रमाण उत्पन्नेऽप्यात्म विज्ञाने प्रारब्धं नैवमुञ्चति। अर्थ आत्मज्ञान प्राप्त थाय तोपण प्रारब्ध कर्म छुटतुं नथी ने ते प्रारब्ध कर्म उत्तम मध्यम अने कनिष्ठ त्रण प्रकारनुं छे तेमां सनकादिकनुं जन्मथीज निवृत्तिनुं कारण रूप प्रारब्ध उत्तम छे. अने याज्ञवल्क्य मुनिनुं प्रथम प्रवृत्ति अने पछी निवृत्तिनुं कारण रूप प्रारब्ध मध्यम कहेवाय छे. अने जनकनी पेठे सदा राज्य भोगादिकनुं कारण रूप जे प्रारब्ध तेने मुनि लोको कनिष्ठ प्रारब्ध कहेछे. परंतु

ब्रह्मवेत्ताने जीवनमुक्तिना सुखमां न्यूनाधिक होयतो भले पण मोक्षमां न्यूनाधिक नथी. तेम ज्ञानीने फरी जन्म मृत्यु प्राप्त थतुं नथी दृष्टान्त. अग्निथी सेकाएला अन्नने खावाथी क्षुधानी निवृत्ति थायछे पण पृथिवीमां वावे तो तेमांथी अंकुरनो उदय थतो नथी. सिद्धान्त तेमज ज्ञानी ज्ञान रूप अग्निथी जन्म मरणना हेतु रूप अज्ञानने बाळीने भस्म करे छे. माटे पछीथी जन्ममरणने पामतो नथी.

आवी रीते शिष्यनी आत्मनिष्ठा जोइने गुरु अत्यन्त प्रसन्न थइने कहे छे के हे शिष्य तुं अनुपम ब्रह्मनी स्थितिने पाम्यो छे. तेथी तुं भाग्यशाळी छे केमके कह्युं छे के. धन्योऽसि कृतकृत्योऽसि पावितं ते कुलंत्वया. अर्थ स्पष्ट छे हवे तारे कांइ पण कर्तव्य रह्युं नथी; केमके तारी उत्तम बुद्धि छे. अने हे शिष्य आ सर्व ग्रन्थनो भावार्थ हुं तने दर्शावुंछुं. जे विवेकी साधन चतुष्टय संपन्न

ज्यारे वेदान्त शास्त्रनुं श्रवण करे, ने वेदान्तना अर्थना वारंवार विचार करे, अने ते रूप मनन करे, तथा निदिध्यासन एटले ब्रह्म निर्विकार हुं परिपूर्ण छुं एवी रीते सजातीयनुं ग्रहण करे, अने देहादिक विजातीय पदार्थनो तिरस्कार करे तेने निदिध्यासन कहे छे. प्रमाण "सजातीय प्रवाहश्च विजातीय तिरस्कृति रिति" भावार्थ उपर कह्यो तेज छे ते निदिध्यासननी परिपक्वताने समाधि कहे छे. ते समाधिथी अधिकारीजन पोताना स्वरूपनो साक्षात्कार करीने पोताना शुद्ध स्वरूप सच्चिदानंदने पामे छे. आत्मा सर्वरूप छे. अने शरीरथी भिन्न छे तथा अन्वयने व्यतिरेक स्वरूपथी रह्यो छे अन्वय एटले जेम मणकामां दोरो व्यापीने रह्यो छे तेम आत्मा सर्वने विषे व्यापीने रह्यो छे. तेने अन्वय कहे छे. अने मणकाथी सुतरनो दोरो भिन्न छे तेम आत्मा सर्वने विषे व्यतिरेक एटले साक्षीरूप रह्यो

छे. अने आत्मा देशकाल वस्तु परिच्छेद रहित छे. तथा सर्व देशकाल अने वस्तुने विषे आत्माज रह्यो छे. माटे देशकाल तथा वस्तुनो त्याग करीयेतो आत्माज प्राप्त थाय छे. ते आत्माने विवेक वृत्तिथी त्रण देहथी भिन्न जाणवो. तथा अध्यात्म विचार युक्तिथीज परब्रह्मने सर्वथी भिन्न जोवो. अने आत्मा सजातीय विजातीय तथा स्वगत भेदथी रहित छे. दृष्टान्त जेमके ब्राह्मणनी ज्ञातिमां औदिच्य. श्री-माळी. मोढ ने मेवाडा विगेरे अनेक भेद छे ते सजातीय कहेवाय छे सिद्धान्त तेम आत्मानी जातिनो बीजो कोइ आत्मा नथी केमके आत्मा एक अद्वैत छे एटले भेद रहित छे तेथी सजातीय भेद रहित छे. दृष्टान्त ब्राह्मण थकी क्षत्रिय जातिना मनुष्यो विजातीय छे सि-द्धान्त तेम आत्माथी कोइ बीजो विजातीय आत्मा नथी. तेथी आत्मा विजातीय भेदथी रहित छे. दृष्टान्त अने एक शरीरनी व्यक्तिमां

स्वा० ४८

हस्तपादादि अवयवो स्वगत भेद कहेवाय छे. सिद्धान्त तेम आत्मामां अवयव नथी तेथी आत्मा स्वगत भेदथी रहित छे. पंचदशीमां कह्युं छे के.

इदं सर्वं पुरासृष्टेरेक मेवाद्वितीयकं ।
सदेवासीन्नामरूपे नास्तामित्यारुणेर्वचः ॥ १ ॥

वृक्षस्य स्वगतो भेदः पत्रपुष्प फलादिभिः ।
वृक्षान्तरात्सजातीयो विजातीयः शिलादितः ॥ २ ॥

तथा सद्वस्तुनो भेद त्रयं प्राप्तं निवार्यते ।
एकाव धारणाद्वैत प्रतिषेधैस्त्रिभिः क्रमात् ॥ ३ ॥

अर्थ. उद्दालक ऋषिए पोताना पुत्र श्वेतकेतुने कह्युं छे के वृक्षना पत्रपुष्प अने फलादि अवयवोथी स्वगत भेद छे. अने बीजा

वृक्षथी सजातीय भेद छे अने शिलादिकथी विजातीय भेद छे ते त्रणे भेद सद्वस्तुमां प्राप्त थता नथी केमके चैतन्यमां जीव इश्वरनो भेद नथी केमके शुद्ध सत्व मायायुक्त चैतन्य इश्वर छे अने तमो प्रधान अविद्यायुक्त जीव छे ते बेमां भेद नथी. दृष्टान्त. जेम हांडीमां मूकेलो दीवो अंदर अने बहार बे जग्याए प्रकाश आपे छे अने घडानी अंदर मूकेलो दीवो घडानी अंदरज प्रकाश आपे छे पण हांडी तथा घडारूप उपाधिमां भेद छे पण दिवारूप अग्निमां भेद नथी बन्ने जग्याए अग्नि एकज छे. सिद्धान्त. हांडीनी स्थाने माया छे. अने दीवाने स्थाने चैतन्य छे. ते चैतन्य अन्तर्यामि रूपे सर्वेने अंदर तथा बहार प्रकाश करे छे. अने घटना स्थाने अविद्या छे ते अविद्या सहित चैतन्य अन्तःकरणनी अंदर साक्षीरूपे प्रकाश आपे छे. माटे माया तथा अविद्या कल्पित एटले मिथ्या छे. अने

बे उपाधिमां रहेलुं चैतन्य सत्य छे. कल्पित वस्तु अधिष्ठाननो बाध करी शकती नथी. अर्थात् हुं भेदथी रहित शुद्ध ब्रह्म छुं ब्रह्मने विषे एटले शुद्ध चैतन्यमां जीव अने इश्वरनो भेद नथी. दृष्टान्त. एक वृक्षने व्यष्टि कहे छे अने घणा वृक्ष जेमां होय एवा वनने समष्टि कहे छे. सिद्धान्त. तेम अल्प उपाधिरूप शरीरवाळा जीवने व्यष्टि कहे छे. अने महदुपाधिरूप वैराटादि शरीरवाळा इश्वरने समष्टि कहे छे. ए बे उपाधिथी रहित चैतन्य परिपूर्ण छे. तेथी चैतन्यने विषे आधार अने आधेय भाव नथी तथा, आविर्भाव अने तिरोभावथी रहित छे. एटले ते शुद्ध ब्रह्म प्रगट पण थतुं नथी. अने अन्तर्ध्यान पण थतुं नथी. शङ्का राम तथा कृष्णादि हेरक युगमां पृथिवीनो भार उतारवा माटे अने धर्मनुं स्थापन करवा माटे प्रगट थया छे. गीतामां कह्युं छे के. श्लोक.

यदा यदा हि धर्मस्यग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम् ।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

अर्थ. ज्यारे धर्म नाश थाय छे अने अधर्म वृद्धि पामे छे त्यारे हुं अवतार धारण करुंछुं पोताना धर्ममां वर्त्तनारा साधु पुरुषोने रक्षण करवा माटे अने असज्जन पुरुषोने नाश करवा माटे तेमज वेदमां कहेला धर्मनुं स्थापन करवा माटे हुं अवतार धारण करुंछुं. एवी रीते इश्वरनां वचन छे. तेनुं समाधान इश्वरनां वचन सत्य छे. पण राम कृष्णादिक अवतार मायाये करीने लीलारूप धारण कर्या छे. दृष्टान्त. जेम रास धारी पुरुष नाटकना खेल करनार तथा भवैया रमत करे छे अने इन्द्रजाली पुरुष जेम नजरबन्ध खेल

स्वा० ५०

रचे छे पोतानी इन्द्रजाली मायाथी नाना प्रकारना खेल देखाडे छे. कोइ वखत राजानो वेष धारण करे छे, अने कोइ वखत साधुनो वेष धारण करे छे, वस्त्रादि उपरनी टापटीपथी फक्त देखाववामां फेरफार थाय छे परंतु तेना शरिरमां फेरफार थतो नथी तेमज ब्राह्मण होय ते क्षत्री के शूद्र थइ शकतो नथी सिद्धान्त. तेम मायानो अंगीकार करीने रामकृष्णादिक अवतार धरवानुं प्रयोजन साधु पुरुषनुं रक्षण करवाने अने दुष्ट पुरुषोनो नाश करवाने माटे छे. ए बधी कृति मायोपहित ब्रह्मने विशे घटे छे. श्रीकृष्ण परमात्माए कह्युं छे के श्लोक.

अजोऽपिसन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपिसन् ।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ॥

अर्थ हुं जन्म रहित छुं अविनाशी छुं. तथा सर्व प्राणीयोनो

इश्वर स्वतन्त्र अने कर्मना फलने आपनारो छुं. तोपण मारी मायाथी देहने धारण करीने प्रगट थाउछुं. तेथी प्रगट थवुं तथा अन्तर्ध्यान थवुं ते सगुण परमात्मामां छे. पण शुद्ध परब्रह्ममां नथी. अने आकाशनी पेठे ब्रह्मव्यापक तथा शुद्ध चैतन्य छे अने जगत जड अने मिथ्या छे. शंका आ लोकमां जेवुं कारण होय तेवुं कार्य थाय छे माटे आ चैतन्यथी जड जगतनी उत्पत्ति केम संभवे; एतो लोक व्यवहारथी विरुद्ध भासे छे. माटे जगतनुं कारण चैतन्यथी भिन्न होवुं जोइए. समाधान. आ जगतनुं कारण चैतन्यज छे तथा लोकना व्यवहारथी जगतनी उत्पत्ति विरुद्ध नथी. दृष्टान्त जेम चेतन प्राणीथी जड एवा नख केश तथा रोमनी उत्पत्ति थाय छे तथा जड शरीरथी चेतन जीवडा उत्पन्न थाय छे माटे एवो कोइ व्यवहारमां नियम नथी के जडथी जडनी उत्पत्ति थाय अने चेत-

नथी चेतननी उत्पत्ति थाय. कारण के मायामां सर्व संभवे छे माटे चैतन्यथीज आ जड जगत उत्पन्न थयुं छे. परंतु हुं चैतन्यज छुं आ जडजगत मिथ्या छे. अने ब्रह्म सत्य छे. आवा दृढ निश्चयने ब्रह्मविद्या कहे छे. अने ते ब्रह्मविद्या संसारथी उद्धार करे छे. ते ब्रह्मविद्या शोभायुक्त रूपरहित अलौकिक शरीर धारण करनारी अने प्रसिद्ध छे. अने ते ब्रह्मविद्यानी कृपाथी संन्यासी पुरुषो पोताना अखंड स्वरूपने जाणीने परमपदने पामे छे. ब्रह्मविद्या एटले हुंज ब्रह्मछुं आवी अन्तःकरणनी वृत्तिने शास्त्रवेत्ता पुरुषो ब्रह्मविद्या कहे छे. आ ब्रह्मविद्याने अत्यन्त छानी राखवी. तेम न बने तो अधिकारी सिवाय उपदेश करवो नहि. कोइ एक समयमां ब्रह्मविद्या ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणोनी पासे जइने कहेवा लागी के हे ब्राह्मणो तमे मने अत्यन्त छानी राखो तेथी हुं तमने भोग अने मोक्ष ए बे

वस्तुओ आपीश अने जो कृपाने वश थइ मने छानी न राखी शकोतो विवेक वैराग्य षट्संपत्ति अने मुमुक्षुता ए चार साधनथी संपन्न अधिकारीयोने उपदेश करजो. अने हुं इर्ष्यावाळा अनम्र अने इन्द्रियोनी लालसावाळा अनाधिकारी पुरुषोने उपदेश करवाथी मोक्षरूप फलने आपती नथी. आ ब्रह्मविद्या विषयक वातनो विशेष विस्तार आत्म पुराणना बीजा अध्यायमां इन्द्र अने प्रतर्दन राजाना संवादथी जणावेलो छे इति अने ब्रह्मविद्या आपती वखते गुरु तथा शिष्ये शान्ति पाठनो उच्चार करवो जोइए. ते शान्ति पाठनो उच्चार करवाथी न्यूनाधिक शब्द तथा अपभ्रंश शब्दना उच्चारथी थएलो प्रत्यवाय (दोष) निवृत्त थाय छे. माटे शान्तिपाठ अवश्य करवो जोइए. एटले प्रणवनो त्रणवार उच्चार करवो. तेज हे प्रणवरूप परमात्मा अमारा गुरु शिष्यना आत्म ज्ञान विषे

योग क्षेम करनार तमेज छो. आवी रीते स्तुति कर

गीतामां कह्युं छे के. श्लोक. तेषां नित्याभियुक्तानां

म्यहं। अर्थ ते नित्ययुक्त पुरुषोना योग एटले प०

क्षेम एटले पदार्थना संरक्षणने हुं परब्रह्म पुरुषोत्तम करुछुं. ॥८

प्रणवरूप परमात्माज श्रेय एटले मोक्षनी प्राप्ति अने प्रिय जे विष-
यरूप मायिक पदार्थनी प्राप्तिने करे छे ब्रह्मविद्यानुं संरक्षण करे
छे. अने रागद्वेषादिकनो नाश करे छे अने अपरोक्ष ज्ञानने आपे
छे. तेटला माटे आ ग्रन्थमां न्यूनाधिक दोषनी निवृत्ति थवा सारु
कोइ जग्याये अनुक्रम तूटयो होय तेना दोषनी निवृत्ति थवा सारु
अने अयोग्य पद होय तेना दोषनी पण निवृत्ति थवा सारु प्रण-
वरूप परमात्माने तथा परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकराचार्य
स्वामिने प्रणाम करुंछुं. ब्रह्मणेनमः परमात्मनेनमः अखंडरूपायन-

मः इति परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकराचार्य संप्रदाय भि-
क्षुकी सच्चिदानंद गिरीविरचितो गुर्जर भाषायां स्वात्म दर्शकाभि
धेयो ग्रन्थः समाप्तः। श्री रस्तुभव्यं भवतु ॥ इतिशम्